thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

# वैदिक गर्जना

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

वर्ष १४, अंक ८, १० अगस्त २०१४

10 SEP 2014

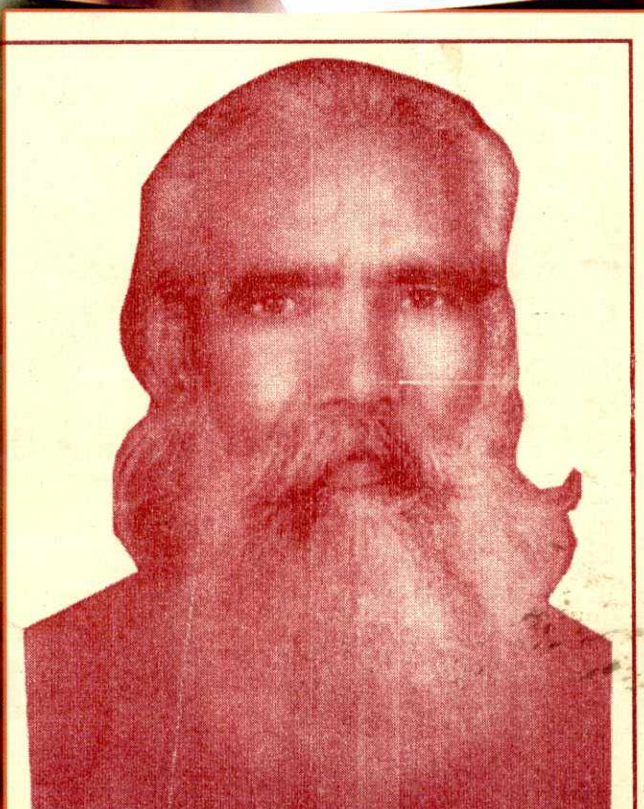

हैदराबाद स्वतंत्रा संग्राम के सेनानी

**पू. स्वामी स्वात्मानन्दजी** (रामचंद्रजी मंत्री)

जन्म-१९०४ निधन-७ अगस्त १९९४

thearyasamaj.org

# -* सभान्तर्गत १३ वां प्रान्तीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर *-

शिविर के समापन समारोह में नान्देड के प्रशिक्षणार्थी श्री यादवराव भांगे को पुरस्कृत करते हुए सभा के कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेनजी राठौर । मंच पर हैं सर्वश्री रामपाल लोहिया, प्रभुलाल गोहिल, पं. प्रतापसिंह चौहान ।

प्रथम पुरस्कार प्राप्त श्री दत्तात्रय मुळे (औरंगाबाद) को पारितोषिक प्रदान करते हुए सभा के संरक्षक श्री रामपालजी लोहिया व प्रभुलालजी गोहिल आदि ।

प्रशिणार्थियों को सम्बोधित करते हुए सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य । मंच पर हैं सभोपदेशक पं.सुधाकर शास्त्री, कोषाध्यक्ष राठौर, लोहिया, गोहिल, पं.चौहान एवं सामने हैं प्रशिक्षणार्थी ।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

# वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ कलि संवत् ५११५ विक्रम संवत् २०७१

दयानन्दाब्द १९० श्रावण/भाद्रपद (संयुक्तांक) . १० अगस्त/सितम्बर २०१४



प्रधान सम्पादक

राजेन्द्र दिवे

(मो.०९८२२३६५२७२)

सम्पादक

प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

(मो.०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ०९४२१९५११९०४), प्रो. देवदत्त तुंगार (मो.०९३७२५४१७७७)

प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य


## अनुक्रम

### हिन्दी विभाग


१) श्रुतिसन्देश............................................२

२) सभा-बैठकें व त्रैवार्षिक निर्वाचन सूचना ............३

३) हिन्दू राष्ट्र नहीं, आर्य राष्ट्र बनें (सम्पादकीय)............४

४) दीर्घायु प्राप्ति के लिए क्या करें ?............१०

५) साहसी वीर, आर्य सेनानी स्वामी स्वात्मानन्दजी............१२

६) कोझीकोड( केरल) के विशाल कार्यक्रम की रिपोर्ट............१९

७) पर्जन्य वृष्टि के सुखद समाचार ............२१

८) गुंजोटी - ऐतिहासिक समारोह की सूचना............२३

९) समाचार दर्पण............२४


### मराठी विभाग


१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी............३१

२) सुभाषित रसास्वादः/ मधुमेह मूर्तिपूजेचा ! ............३२

३) वेदप्रतिपादित सामाजिक तत्वे............३४

४) गाथा वाचू दयानंदाची............३८

५) असा ही एक आदर्श विवाह............४०

६) वार्ता विशेष............४३

७) श्रावणी वार्ता............४७

८) शोक समाचार............५०

९) म. दयानंद-मराठी कॉमिक्स............५३



• प्रकाशक •

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज परली-वैजनाथ ४३१५१५

• मुद्रक •

वैदिक प्रिन्टर्स महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-

वार्षिक - रु. ५०/-

आजीवन रु. ५००/-



इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होना

thearyasamaj.org



# यजमानों का कल्याण

**ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजया पशुभिर्भूयात् ।**
**घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छदिरसि विश्वजनस्य छाया ।।**

**अन्वयार्थ** :- हे यज्ञ करनेवाले यजमान की स्त्री ! जैसे तू प्रजया (**प्रजया**) वा अपने संतानों और (**प्रशुभिः**) हाथी, घोडे, गाय आदि पशुओं के सहित (**अस्मिन्**) इस (**आयतने**) वा अपने स्थान वा सबके सत्कार कराने के योग्य यज्ञ में (**धुव्रा**) दृढ संकल्प (**असि**) है । वैसे (**अयम्**) यह (**यजमानः**) यज्ञ करनेवाला तेरा पति यजमान भी (**ध्रुवः**) दृढ संकल्प है । तुम दोनों (**घृतेन**) घृत आदि सुगंधित पदार्थों से (**द्यावापृथिवी**) आकाश और भूमि को (**पूर्येथाम्** ) परिपूर्ण करो । हे यज्ञ करनेवाली स्त्री ! तू (**इन्द्रस्य**) अत्यन्त ऐश्वर्य को भी अपने यज्ञ से (**छदिः**) प्राप्त करनेवाली (**असि**) है । अब तू और तेरा पति यह यजमान (**विश्वजनस्य**) संसार का (**छाया**) सुख करनेवाला (**भूयात्**) हो । (यजु. ५/२८)

**भावार्थ** – मनुष्यों को चाहिए कि जिन यज्ञ करनेवाले यजमान की पत्नी और यजमान से तथा जिस यज्ञ से दृढ विद्या और सुखों को पाकर दुःखों को छोडें, उनका सत्कार तथा उस यज्ञ का अनुष्ठान सदा ही करते रहें । (महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य से साभार)


**।। ओ३म् ।।**

मार्तंड जे तापहीन !

**अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो,**
**न हन्यते हन्यमाने शरीरे ।।**

**प्रसिद्ध शिक्षाविद्, समाजसेवी आदर्श व्यक्तित्त्व**
**त्याग व समर्पण की प्रतिमूर्ति**
**आदरणीय पूज्य**
**स्व.श्री दिगंबररावजी होलीकर**
**के प्रथम स्मृतिदिवस (दि. १८/९/२०१४) पर**
**भावपूर्ण श्रद्धाजंलि !**

**- आपके ही श्रद्धावनत-**
**श्रीमती सुभद्रा होलीकर**

सौ. ज्योति..............................अरूण मदनसुरे
सौ. संध्या..............................बलराम येरमे
सौ. सुंदर..............................रामराव जाधव
सौ. प्रार्थना..............................राजेश देशमुख

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की

## अन्तरंग व साधारण सभा बैठक व त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन

दि. २७ व २८ सितम्बर २०१४/ स्थान- स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम,परली-वै.

### * सूचना व निवेदन *

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग व साधारण सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उनकी बैठकें तथा सभा का त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन निम्न निर्देशित तिथि व समयानुसार सम्पन्न होंगे ।

* अन्तरंग सभा बैठक - शनिवार दि.२७/९/२०१४ - सायं. ५ बजे
* साधारण सभा बैठक - शनिवार दि.२७/९/२०१४ - रात्रौ. ८ बजे
* त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन -रविवार दि. २८/९/२०१४ प्रातः११ बजे

**विशेष**- १) दि. २७ की दोनों बैठको में निवर्तमान सभा के अन्तरंग व साधारण सदस्य भाग लेंगें ।

२) दि. २८ के त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन में सभान्तर्गत आर्य समाजोंद्वारा भेजे गये नये सभाप्रतिनिधि, जिनका प्रतिनिधि शुल्क व समाजों का दशांश शुल्क सभा में जमा किया हो, वे ही भाग ले सकेंगे ।

अतः अन्तरंग व साधारण सदस्य दि. २७ की बैठकों में व विभिन्न आर्य समाजों के नये सभाप्रतिनिधि दि. २८ के त्रैवार्षिक निर्वाचन अधिवेशन में समय पर सम्मिलित होवें । (सूचनापत्र सभी सदस्यों को डाकद्वारा भेजे गये हैं ।)

**नोट**- गुरूकुल पहुंचने की व्यवस्था **आर्य समाज परली** इस स्थान से की गयी है । अतः रेल व बस से परली पहुंचनेवाले सभी आर्यजन सीधे आर्य समाज मंदिर, सुभाष चौक, परली पहुंचे । यहीं से आपको गुरूकुल ले जाया जाएगा ।

-* निवेदक *-

| स्वामी श्रद्धानन्द | बलिराम पाटील | राजेन्द्र दिवे | उग्रसेन राठौर |
|---|---|---|---|
| प्रधान | कार्यकारी प्रधान | मन्त्री | कोषाध्यक्ष |

एवं सभी पदाधिकारी, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

**आर्यत्व गुणों से ओतप्रोत, आदर्श शिक्षक, समाजसेवक व महान देशभक्त**

**स्व. श्री दिगंबररावजी होलीकर (गुरूजी)**

के प्रथम स्मृतिदिवस (१८/९/२०१४) पर समस्त आर्य जगत् की ओर से

**सविनय श्रद्धाजंलि व शतशः अभिवादन !**

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
तथा राज्य की सभी आर्य समाजें

thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्  वेद व सृष्टिविज्ञान के आधार पर

# हिंदू राष्ट्र नहीं, आर्य राष्ट्र बनें ।

एक समय भारत देश सारी दुनियां का गुरू था । संसार के सभी विद्वान यहीं पर आकर ज्ञान-विज्ञान व अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण करते थे तथा अपने चरित्र का निर्माण करते थे । उस समय वेद का शाश्वत सत्य ज्ञान जो कि सार्वभौम व मानवमात्र के कल्याण व प्राणिसमूह के लिए सर्वकाल पूर्ण हित का था, उसे ही ऋषी लोग सभी को प्रदान करते थे । दुनियां आज भी सब का सर्वकाल में कल्याण ही चाहती हैं । वेद का शाश्वत ज्ञान आज भी निसर्ग में विद्यमान है । यह ज्ञान प्रत्यक्ष निसर्ग में मिलता है और आगे भी निरंतर मिलता ही रहेगा । इसमें कोई परिवर्तन कर नहीं सकता । इसे बदलने की काशिश करेगा, तो वह समस्याएं ही खडा करेगा और दुःख भोगेगा । मनुष्य भी निसर्ग में रहनेवाला एक प्राणी है । उसकी आजीविका निसर्ग से ही चलती है । अतः वह निसर्ग के नियमों से बंधा हुआ है । निसर्ग में जो नियम है, उसका पालन करना प्रत्येक मनुष्य का परमकर्तव्य है, क्योकि वे सभी नियम सबके, सर्वकाल हित में है । मनुष्य हो या अन्य प्राणी, सभी जीना चाहते हैं और सुख, शांति व आनंद प्राप्त करना चाहते हैं । मनुष्य तो बुद्धिमान व उत्तम क्रियाशील प्राणी है । उसे परमात्माने स्वतंत्रता प्रदान की है । साथ ही उसके लिए कर्मफल की व्यवस्था भी बनाई है । अच्छे कर्म करोगे, तो अच्छे फल मिलेंगे और बुरे कर्म करोगे, तो बुरे फल मिलेगे । अच्छे या बुरे कर्म ये सभी अविचारों या ज्ञान-अज्ञान पर निर्भर है । अच्छे विचार शाश्वत वेद के ज्ञान के अनुसार होते हैं । मनुष्य की आत्मा स्वयं ही सुख की इच्छा करती हैं और उसको ही सुख प्राप्त करना हैं, दुःखों का निवारण करना हैं । इस विषय का ज्ञान केवल और केवल वेद में भी है और निसर्ग में ही है । निसर्ग यह तो एक परिपूर्ण शिक्षक (Perfect Teacher) है ।

आज सारा संसार अज्ञान के कारण समस्याग्रस्त है । वेद या निसर्ग ही समस्याओं के उत्तर बता सकते हैं । मनुष्य नें आज अपनी ईमानदारी, कृतज्ञता, दूरदर्शिता आदि अच्छाइयां खो दी हैं । उसे अपनी आत्मा का भी ध्यान नहीं हैं, जो कि सब के साथ हैं, जिसके कारण जीवन हैं, जिसके लिए जीवन हैं, इस ही वह पूर्ण रूप से भूल गया है । आत्मा यह तो जीवन का स्वामी हैं, कर्ता व प्रमुख आधार हैं । शरीर, मन, बुद्धि, चित्त, अन्तःकरण ये सभी साधन आत्मा को प्राप्त हुए है । ये सभी साधन प्रत्यक्ष आज भी सत्य हैं , किन्तु इन साधनों को बिगाडकर, उसका दुरूपयोग

thearyasamaj.org

कर कभी भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। साधन बिगड गये, तो मनुष्य बिगड जाता है। मनुष्य बिगड गया, तो परिवार, समाज, देश और विश्व बिगड जाता हैं। इससे हर क्षेत्र में बहुत सारी समस्याएं और दुःख ही दुःख उत्पन्न होते हैं।

सम्प्रति सारी दुनियां अज्ञान, अविद्या तथा मत-मतान्तरों व पन्थों के कारण त्रस्त हो गई हैं। सुख देने तथा राज्य करने के जब से प्रयास हो रहे हैं, तब से परेशानियां बडे पैमाने पर बढ गई हैं।

पन्थवाद, जातिवाद, नास्तिकवाद, समाजवाद, साम्यवाद, वाममार्ग, पौराणिकवाद, गुरूडम, एकलौता पुत्र, प्रेषित, स्वर्ग-नरक, धर्मवाद, अध्यात्मवाद आदि विषयों के कारण इस समय अनेकों समस्याऐं निर्माण हुई हैं। सभी ने अपने-अपने प्रयोग करके देखे हैं। परिणाम तो दुःखदायक ही रहा हैं। इस पर भी दुःखों के मूल कारणों को देखने के बजाय लोग केवल दुराग्रह करते हैं। इसी कारण आज सभी का जीना कठिनसा हो गया हैं। अब भी समय गया नहीं। सभी लोग इन अज्ञान, अन्धविश्वास, अधर्म, अविद्या, अनात्मवाद, ईर्ष्या, द्वेष, संकीर्णता, आदि दोषों को छोडकर वेद के सत्य ज्ञान को स्वीकारने व उसे आचरण में लाने का प्रयास करेंगें, तो यह देश स्वर्ग बन सकता है और फिर से संसार के सामने विश्वगुरू के रूप में अपना आदर्श स्थापित कर सकता है। तब दुनियां भी आपके पदचिह्नोंपर चलेगी और आपकी मानेगी। वेदों के गलत अर्थ लगाने व विपरीत आचरण करने के कारण ही ये सभी मत-मतान्तर बन चुके हैं। अज्ञान व अन्धविश्वास बडे पैमानेपर बढ चुका है। हम परमात्मा, आत्मा व निसर्ग से तथा ईश्वर की न्यायव्यवस्था व नियमों से ईमानदार नहीं रहे। इन सभी के पालन में ही आत्मकल्याण है, इसे हम पूर्णतया विस्मृत कर चुके हैं। इसके विपरीत स्वार्थ व मतलब से वेद व ईश्वर के नाम पर गलत आचार - विचार फैला रहे हैं।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना पूरा जीवन लगाकर, कठोर तपश्चर्या करके, अनेकों कष्ट सहन करके, किसी भी प्रलोभन या स्वार्थ को स्वीकार न करते हुए प्रामाणिकता के साथ दुनियां के लोगों को मानवमात्र के कल्याण का, आत्मा के पूर्ण कल्याण का तथा सुख,शांति, आनंद, सुरक्षा, नैतिकता आदि का मार्ग बताया। साथ ही धर्म-अधर्म, ईश्वर-अनीश्वर, सत्य-असत्य, न्याय-अन्याय, अध्यात्म-नास्तिकवाद आदियों की वेदज्ञान के आधार पर ही समीक्षा की। ऋषियों की परम्परा में वेदभाष्य किये। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, संस्कार विधि आदि ग्रन्थ लिखे। दुनियां के तथाकथित विद्वानों को ललकारते हुए

thearyasamaj.org

कहा- **'ऐ दुनियांवालों ! सुख-शांति,आनन्द व आत्मकल्याण चाहते हो, तो वेदों की ओर लौटो।'** इतना ही नहीं तो उन्होंने **विद्वानों एक होकर सत्य को सत्य और असत्य को असत्य समझने का आग्रह किया, जिनके कारण आज सर्वत्र महाभंयकर संघर्ष जारी हैं ।** विद्वान लोग सत्यासत्य में विवेक न रखते हुये असत्य को ही ग्रहण कर रहे हैं । वेद में प्रतिपादित ईश्वर की व्यवस्था और न्याय नियम क्या हैं ? इसे अवश्य देखें । इन सभी को हम निम्नलिखित रूप में जान सकते हैं । इसीसे सारा संसार सुख के मार्ग पर चल सकता हैं –

* ईश्वरप्रदत्त सभी वस्तुएं सबके लिए खुली व कल्याण हेतु हैं ।
* जो इनसे लाभ उठायेगा, उसी का ही कल्याण होगा, अन्य किसी का नहीं ।
* निसर्ग में कोई पक्षपात, पंथवाद, जातिवाद, प्रान्तवाद या देशवाद नहीं है । वे सभी ग्लोबल व सार्वभौम हैं ।
* मनुष्य का जीवनकाल मर्यादित हैं । वस्तुओं का उपभोग करने में उसे मर्यादायें पडती हैं । भोग जादा या कम करने अथवा बिलकुल न करने से दुःख उत्पन्न होते हैं ।
* ईश्वर का ज्ञान व न्याय ये पक्षपात रहित हैं ।
* निसर्ग में सारी सृष्टि का नियमन करनेवाला ईश्वर एक ही है । वह सब जगह अन्तर्बाह्य व्यापक हैं । हर एक के शरीर व आत्मा में वह व्याप्त है, जिसकी प्रत्यक्ष अनुभूति हम सभी को होती हैं ।
* मनुष्य जन्म लेता है, तो वह केवल मानव के रूप में । नवजात शिशु पर किसी जाति या पन्थ की मुहर निसर्ग से नहीं आती । मनुष्यमात्र की तो एक ही जाति हैं ।
* शरीर से आत्मा निकल जाती हैं, तब वह शरीर अचेतन हो जाता हैं इससे जीवन ही खत्म हो जाता हैं ।
* जीवन का मूलभूत कारण व कर्त्ता आत्मा है । उसे दुःख पसंद नहीं हैं ।
* आत्मा की प्रसन्नता या सुख ही धर्म व पुण्य तथा अप्रसन्नता अधर्म व पाप है
* सुख या प्रसन्नता प्राप्ति या उसे मिले हुए शरीर, मन, बुद्धि व पर्यावरण को ठिक रखने की जिम्मेदारी आत्मा की है ।
* इसके लिए उसे सत्यज्ञान, न्याय व्यवस्था का ज्ञान रखना आवश्यक है ।
* व्यक्तिनिर्माण के विना कोई भी कार्यसिद्धि नहीं हो सकती ।
* इसके लिये शिक्षा में आध्यात्मिक ज्ञान व आत्मकल्याण का पाठ्यक्रम लागू करना आवश्यक हैं ।
* जन्मतः आत्मा को पूरी स्वतंत्रता प्राप्त

thearyasamaj.org

हुए है । जो लेना है, वह ले सकता है साथही उसकी न्याय व्यवस्था व सुख-द्ःुख की व्यवस्था भी विद्यमान है । इसका प्रयोग जो गलत तरीके से करेगा, तो वह दुःख ही पायेगा । इसके लिये सरकार या अन्य कोई नेता कुछ कर नहीं सकेंगें ।

* सरकार के कानून व नियम परमात्मा के नियम व व्यवस्था के अनुसार होने चाहिए ।
* आत्मा के लिये कोई जाति या पन्थ, प्रात अथवा देश की सीमा नहीं हैं, यह एक वास्तविक सत्य है ।
* आत्मा की प्रसन्नता मानवीय मूल्यों को धारण करने, प्रामाणिक कर्तव्य करने तथा ईश्वर के सान्निध्य में बैठकर साधना, उपासना व भक्ति करने में हैं । इसी में सब का सर्वकाल कल्याण हैं और यही सृष्टि का सत्य हैं ।
* जिस उद्देश्य से परमात्माने वस्तुएं हमें दी हैं, उसी के लिए ही उसका उपयोग करना, यह सदुपयोग है । इसी में सुख व आनंद हैं । इस उद्देश्य के विपरीत उपयोग करना, यह दुरूपयोग है । इससे तो दुःख ही आता है ।
* सदुपयोग और दुरूपयोग करनेवाला स्वयं आत्मा है । ये नियम सार्वभौम है ।
* निसर्ग व वेद में एक ईश्वर, एक धर्म, एक मानवजाति, एक ही जीवनलक्ष्य और लक्ष्यपूर्ति का एक ही मार्ग विद्यमान है । यह एक कडवा सत्य व शाश्वत नियम हैं । इसी को स्वीकार करके उसके अनुसार चले बिना किसी को भी सुख, शांति, आनन्द, सुरक्षा आदि प्राप्त नही हो सकते ।

वेद स्पष्ट रूप से कहता है -

**नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।**

ईश्वरीय सत्य (वैदिक) ज्ञान के बिना अन्य कोई दूसरा रास्ता नहीं हैं । सम्प्रति सभी पन्थवादी व जातिवादी इस संदर्भ में विचार करें । सोचें और सत्य को ग्रहण करें । अब तक आपने विभिन्न विचारों द्वारा अनेकों मार्ग ढूंढे और वे आचरण में लाये किन्तु, इन सब के परिणाम गलत आते रहे हैं । आज हर एक मनुष्य की आत्मा अज्ञान व अविद्या के कारण तरस रही हैं । सारे लोग इन अविचारों से उब चुके हैं । फिर भी लोग अपना दुराग्रह व हठधर्मिता छोड नहीं रहे । अन्य देशों की बात छोडों, अपने भारत में भी सभी लोग परेशानियों व समस्याओं से पीडित हैं। इस समय उनकी संख्या अधिक बढ चुकी हैं और आगे भी बढती रहेगी ।

कईं वर्षों से सभी को यही लग रहा था क देश में कुछ परिवर्तन आवें । सभी को सर्वमान्य हो, ऐसा प्रजाजनों का पूर्ण हित व कल्याण करनेवाला आदर्श नेता देश को मिलें । सौभाग्य

thearyasamaj.org

से श्री नरेंद्र मोदीजी आज देश प्रधानमंत्री बन चुके हैं। श्री मोदीजी पर हिन्दुत्ववादी विचारों का प्रभाव हैं । विशेषतः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के संस्कारों मे वे पले हैं। किन्तु उन्होंने लोकसभा चुनाव में पहले ही घोषणा की थी कि 'वे सबके हैं और सभी देशवासियों के लिये सर्वहित में काम करेंगें । किसी प्रकार का कोई भेदभाव नहीं होगा । मानवता के आधारपर देश चलेगा ।' बस इसी घोषणा को ध्यान में रखकर और उनकी स्वच्छ व आदर्श प्रतिमा तथा उनके प्रभावशाली व्यक्तित्त्व को देखकर देशवासियों ने उनपर विश्वास रखा और पूरे बहुमत के साथ प्रधानमंत्री पद पर बिठाया । केवल मोदीजी को देखकर लोगों ने मतदान किया, न कि भाजपा, शिवसेना तथा अन्य दलों के कारण ! लोगो ने केवल मोदी को ही सामने रखकर देश में परिवर्तन लाया हैं । चाहे उम्मीदवार कैसे भी क्यों न हो, लेकिन उद्देश्य यही था कि देश की सरकार मोदीजी के बनें !

अब श्री नरेंद्र मोदीजी को मानवमात्र के कल्याण का, आत्मकल्याण का आधार लेकर ही सार्वभौम स्तरपर विचार करना चाहिए । वेदप्रतिपादित विचारों के अनुसार ही देश की व्यवस्था चलनी चाहिये । सभी प्रकार की पन्थवादी, जातिवादी संकीर्णताओं को छोडकर केवल मानवता का आधार लेते हुए भारत देश का कल्याण करना चाहिए । वेदानुसार सब के कल्याण हेतु सत्यज्ञान के पक्षधर बनकर देश की व्यवस्था चलाना, यह उनके लिए चुनौती है । लोगों ने उनपर पूरा भरोसा जताया हैं । उनकी आवाज भी बुलंद हैं । जनता भी मोदीजी की बातों पर विश्वास रखने के मुड में हैं । सब का सर्वकाल आत्मकल्याण वेद के द्वारा ही हो सकता हैं । इस बात को मोदीजी लेकर चलेगें और विशेष कुछ कर दिखायेंगें, तो उनका नाम अजरामर हो सकता है। वे चक्रवर्ती नेता व विश्व के नता भी बन सकते हैं । महर्षि दयानन्द गुजरात की धरती पर वें जन्में हैं । महात्मा गांधी व सरदार वल्लभभाई पटेल जैसे महान नेता भी इसी भूमि से उत्पन्न हुये । इन महापुरूषों ने स्वतंत्रता व राष्ट्र निर्माण का जो सपना देखा था, जिसके लिये वे जीवनभर जिये और मरे ! उसी गुजरात की धरती में जन्मे श्री मोदीजी को भी अपने इन पूर्वजों के सपनों को साकार करने हेतु जीवन लगाना चाहिए

इस दृष्टि से मोदीजी को मानवता व समग्र देशवासियों के हित में काम करना चाहिए, तभी उनकी कीर्ति बढेगी । अन्यथा यदि हिदुत्ववाद व रा.स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस.) के चक्कर में जाते रहेंगें, तो मोदीजी पूरी तरह असफल

thearyasamaj.org

रहेंगे । आज केवल भारत को ही नहीं, बल्कि समग्र विश्व को महर्षि दयानंद द्वारा प्रतिपादित वेद मार्ग पर चलने की आवश्यकता हैं, जिससे वैदिक राष्ट्र, वैदिक साम्राज्य बनकर भूमंडल पर सुख व शांति फैलने में मदद मिलेगी । मोदीजी इस बात को पूरा कर सकते हैं । देश का नेता यदि ऐसा करें, तो सब कुछ हो सकता हैं । वेदों की ओर लौटने का संदेश देशवासियों को देकर एक ईश्वर, एक वैदिक धर्म, एक मानव जाति, एक ही समान शिक्षा पद्धति, एक ही जीवन लक्ष्य-आत्मकल्याण तथा सर्वकल्याण करने हेतु मोदीजी कदम उठायें । इस वैचारिक व सामाजिक क्रांति से भारत सही अर्थों में महासत्ता बन सकता हैं और विश्व को भी मानवता की प्रेरणा दे सकता हैं । इस कार्य में श्री मोदीजी को ईश्वर शक्ति, सामर्थ्य व बल प्रदान करें, यही कामना..!

**– डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ**
०९४२१९५१९०४

॥ ओ३म् ॥

## महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

## मानव जीवन कल्याण ज्ञान प्रचार अभियान २०१४

# –विद्वानों के प्रति 'ऋणनिर्देश'–

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गत दि.२७ जुलाई से २४ अगस्त २०१४ के दौरान राज्य में व्यापक रुप में **'मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान'** सफलता के साथ सम्पन्न हुआ । इसके लिए सभा ने उत्तर भारत के १२ तथा इस प्रांत के लगभग ६० विद्वानों व भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया था । सभी ने पूर्वनिर्दिष्ट विभिन्न तिथियों में अलग-अलग लगभग सवा सौ आर्य समाजों में पहुंचकर बडी निष्ठा, लगन व सहृदयता के साथ वेदप्रचार किया । इन विद्वानों को यात्रा, निवास तथा अन्य व्यवस्था में कुछ अव्यवस्था, असुविधा हुई होगी तथा नानाविध कष्ट उठाने पडे होंगे । इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं ।

विशेषतः बाहर से पधारे विद्वानों ने पूरा एक माह का समय इसके लिए दिया । अपने घर-परिवार की सारी जिम्मेदारियों को छोडकर हमारी सभा के निवेदन को सहर्ष स्वीकार कर वेदप्रचार के पवित्र कार्य में अपना पूरा योगदान दिया । अतः हम आपके सविनय ऋणी हैं । सभी विद्वानों व भजनोंपदेशकों का सहृदय धन्यवाद एवं आभार ! इसी प्रकार से आगामी वर्ष में भी सहयोग मिलें, यही शुभ आकांक्षा !

**आभारोत्सुक-महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

thearyasamaj.org



# दीर्घायुप्राप्ति के लिये क्या करे ?

– वैद्य विज्ञानमुनि

इस जगत् में सर्वश्रेष्ठ योनि मनुष्य की है । सार में जितने भी प्राणी, जीव, जन्तु हैं, वे सभी भोग योनिवाले हैं । वे केवल भोग भोगते हैं, किन्तु मनुष्य यह कर्म करके ही आयु को उन्नत करता है । आज सारे जगत् मे अनुसंधान जारी है । शास्त्रज्ञों की दृष्टि से देखें, तो आहार कम क्यों न हो, परंतु वह पौष्टिक होना चाहिए । दीर्घायु को पाने में शरीर यह एक पोषक साधन है । इसके लिए वैयक्तिक नियमों का पालन भी होना चाहिए, लेकिन प्रायः ऐसा होता नही । जैसे अतिनिद्रा, अति भोजन, व्यसन, दिनचर्या, रात्रचर्या के नियमों का पालन न करना । बडी– बडी योजनाओं के लिए दिनरात कठिन परिश्रम करना, शारीरिक और मानसिक विश्रांम न लेना आदि यह सब ठीक नही हैं ।

समदोषाः समाग्निश्च समधातुः मलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।
(सुश्रुत.सं.–१५.४१)

अर्थात् जिसके त्रिदोष- वात, पित्त, कफ ये तीन दोष समान हो, शरीर को धारण करनेवाली सात धातुएँ उचित अनुपात में हो, जठराग्नि सम हो, मलमूत्र की क्रिया सम हो तथा सभी इन्द्रियाँ, मन और आत्मा भी प्रसन्न हो, तो वह व्यक्ति स्वस्थ कहलाता है । किसी कवी ने कहा है –

**प्रज्ञापराधो हि मूलं सर्वरोगाणाम् ।**

सभी रोगों का कारण अज्ञान, बुद्धि का दोष, तनाव आदि हैं । जीवित रहने का जो अर्थ है, उस अर्थ में अधिक खानेवाला जीवित रहता नहीं । भोजन की मादकता इसे बढने नहीं देती । उसका शरीर किसी भी रोग के लिए तैयार ही रहता है ।

जो दोष शरीर में रहता है, उस रोग की शुरूवात उसमें होती है । उस रोग की उपेक्षा करने से बडे रोग होने की संभावना रहती है । समय पर शरीर का शमन, ब्रहण अर्थात् पंचकर्म, प्रकृति के नियमों का पालन और औषधि से सुधार कर सकते हैं व दीर्घजीवी बन सकते हैं । पूर्ण दीर्घायु हेतु कुछ नियम इस प्रकार हैं

**१) प्रातः जागरण –**

प्रातः ४ बजे उठते ही उषःपान करना चाहिये । आधा या एक लिटर पानी तांबे के पात्र में रखा हुआ जल अधिक लाभकारी माना जाता है । शौच आदि से निपटकर ५ बजे भ्रमण करने हेतु जाना चाहिए । खुले स्थान में भ्रमण करने से शरीर दिनभर चुस्त रहता है । जल्दी सोना और जल्दी उठना । रात में ९ बजे और प्रातः चार बजे उठना चाहिए ।

**२) शाकाहारी भोजन –**

यह कर्मठता व जीवनी शक्ति देता है । हमारा भोजन गेहूँ, जवार, फल,

thearyasamaj.org
दूध, घी, सब्जियां आदि से सन्तुलित होगा, तो स्वास्थ्य दीर्घायुयुक्त होगा । कम भोजन करने से शक्ति अधिक मिलती है, अधिक भोजन से शक्ति कम मिलती है, रोग आदि अधिक होते हैं । सप्ताह में एक दिन उपवास रखना बहुत लाभकारी है ।

३) जब मनुष्य 'भोजन करूं या नहीं ?' ऐसा सोचता है, तब उसे भोजन नही करना चाहिए । जब 'शौच जाना या नहीं ?' ऐसा सोचता है, तभी शौच को जरूर जाना चाहिए

**४) हित भुक्, मित भुक्, ऋत भुक् –**

हितकर खावे, कम खावे व ईमानदारी से कमाया हुआ खावे ।

५) दीर्घायु पाने के लिए सोने का भी नियम है । दक्षिण की ओर पाँव करके सोना नहीं चाहिए, क्योंकि पृथ्वी में दक्षिण और उत्तर लोह चुंबक शक्ति है । हमारे शरीर में भी दक्षिण और उत्तर लोहचुंबक है । इसके परिणाम हमारे शरीर पर भी होते हैं । अतः इस विषय में दक्षता लेनी है ।

६) दीघायु के लिए ब्रह्मचर्य का पालन भी अवश्यक है । इस विषय में स्वामी शिवानंदजी लिखित **ब्रह्मचर्य ही जीवन है** । यह ग्रन्थ अवश्य पढें ।

७) निरोगी मनुष्य का लक्षण –

**पाँव गरम, पेट नरम, माथा ठंडा ।**

८) दिन में सोना दीर्घायु के लिए हानिकारक है । मनुष्य को शौच के लिये दो समय जाना चाहिए । प्रातः ५ बजे और सायं. ५ बजे । भोजन सुबह १० बजे और सायं. ७ से ८ के बीच होना चाहिए । विद्यार्थी व काम करने वालों को ३ समय भोजन करना आवश्यक है । भोजन के बाद तक्र (छांच) पीना चाहिए । सोते समय दूध पीना चाहिए और प्रातः पानी पीना चाहिए । एक वैद्यराज सुंदर शब्दों में कहा है –

**आधा खाईए, दुगुना पीजिए।**
**तिगुना श्रम कीजिए, चौगुना हंसिए ।।**

पेट में वायु व पानी के जगह रखिए ।

९) भोजन में विरूद्ध आहार नहीं होना चाहिए । दुध के साथ खट्टा, तीखा, कडवा, कसैला, तला हुवा तथा मसालेवाले पदार्थ नहीं होने चाहिए ।

१०) अपने शरीर में आवेगों को कभी नहीं रोखना चाहिए । यथा – छींक, शौच, खांसी, पेशाब, जंभाई, अश्रु, कै, अपानवायु , डकार आदि बातों को रोक देने से निश्चित ही बडे बडे रोग हो सकते हैं । यहां तक कि मृत्यु भी आ सकती हैं, किन्तु मन गलतियं रता हैं । अतः मन के दोषों व दुर्गुणों को रोखना चाहिए ।

११) पानी पीने का भी एक नियम होता हैं । भोजन के पश्चात् आधा घण्टा रूककर पानी पीना चाहिए । * इन सभी आहार–विहार के नियमों कों पालने से मनुष्य निश्चय ही पूर्ण दीर्घायु प्राप्त कर सकता है ।

**–संजीवनी चिकित्सा केंद्र,**
गुरूकुल आश्रम,परली/९९७५३७५७११

thearyasamaj.org

# साहसी वीर, आर्य सेनानी -स्वामी स्वात्मानन्दजी

-डॉ. नयनकुमार आचार्य

शहीदों की चिंताओ पर हर वर्ष लगेंगे मेले !
वतनपर मिटनेवालों का बाकी यही निशां होगा ।।

इस संसार में अपने निजी जीवन, परिजन, रिश्तेदार एवं सम्बन्धियों के लिए तो सभी जीते हैं, लेकिन समाज, राष्ट्र व मानवजाति के लिए जीनेवाले लोग कम ही देखने मिलते हैं । आर्य समाज के संस्कारों में पले व बढे हुए सज्जन महानुभावों की मिसल कुछ और ही होती है । देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करनेवालों की संख्या कुछ कम नहीं हैं । विशेषकर दक्षिण भारत के आर्यों ने अपनें प्राणों की बाजी लगा कर हैदराबाद स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और यहां की जनता को निजाम व उसके जुलमी रजाकारों के अत्याचारों से छुडाकर राहत दिलाई ।

आन्ध्र, कर्नाटक व महाराष्ट्र के कईं जिलों को मिलाकर उस समय हैदराबाद स्टेट चलता था, जिसका प्रमुख शासक था निजाम । महाराष्ट्र के लातूर, उस्मानाबाद, परभणी, हिंगोली, नांदेड, बीड, जालना, औरंगाबाद ये (इस समय के आठ जिले) शहर उस समय आर्य कान्तिकारकों के लिए केंन्द्र माने जाते थे । इन्हीं में से लातूर भी एक ऐसा ही क्रान्तिकारी गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र रहा है । यहां की पुरानी आर्य समाज (गांधी चौक) इस समय ८० वें वर्ष में पर्दापण कर रही है । इसी आर्य समाज के एक समय के बहुतही क्रियाशील 'मन्त्री' व महान देशभक्त, स्वाधीनता सेनानी श्री रामचन्द्रजी बिदरकर जो कि अपने ही होती क्रान्तिकारी जीवन व कार्यों के कारण तथा बाद में संन्यास दीक्षा लेकर स्वामी स्वात्मानन्दजी के नाम से सर्वत्र विख्यात हुए ।

श्री स्वामीजी का जन्म सन् १९०४ में कर्नाटक के बीदर शहर में एक साधारण परिवार में हुआ । माता चन्द्रभागाबाई तथा पिता श्री तुकाराम डोईजोडे ये दोनों धार्मिक, सहिष्णु, स्नेहील स्वभाव के थे । इस दम्पती की रामचन्द्र, लक्ष्मण, पुण्डलिक एवं रत्नाबाई (सोनवे) ये चार सन्तानें । इन सभी में बडे होने के कारण रामचन्द्रजी पर परिवार की जिम्मेदारियां आ पडी । युवावस्था में सन् १९३० को वे अपने भाई व परिवार को लेकर लातूर आये । वैसे तो पहले से ही इनका कपडा सिलाई (दर्जी) का पारम्परिक व्यवसाय था । शायद बीदर में इस व्यवसाय में प्रगति नहीं हुई होगी, इस कारण उन्हें लातूर आना पडा । यहां के कपडा लाईन में उनका यह सिलाई काम बहुत ही उत्तम रीति से चलता था ।

thearyasamaj.org

उनकी दुकान में लगभग ३५ सिलाई मशिनें थी । बढिया काम की वजह से शहर में उनकी एक प्रतिष्ठित दर्जी के रूप में.ख्याति हुई ।

लातूर के कई दर्जी (भावसार) लोगों पर आर्य समाज के विचारों का प्रभाव रहा है । इस कारण रामचन्द्रजी भी इसी विचारधारा की ओर आकृष्ट हुए । वैदिक विचारों का इनपर ऐसा रंग जमा कि देखते ही देखते वे पक्के आर्य समाजी बन गये । उस समय हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य आर्य समाज की सक्रिय भूमिका थी । रामचंद्रजी में भी क्षात्रवृत्ति कूट-कूट कर भरी थी, तब वे चुप-चाप थोडे की बैठते । अतः बडे उत्साह से इस आन्दोलन में सम्मिलित हुए और उन्होंने इस आन्दोलन का नेतृत्व ही किया । उंचा पूरा कद, बलिष्ट शरीर और धैर्य-वीरता होने से किसी प्रकार अन्याय सहन करना, यह उनके बस का नहीं था । इन्हीं कारणों से निजाम के विरूद्ध चलाये गये आन्दोलन में वे जोश के साथ कूद पडे ।

इस परिसर में आज भी उनका नाम बडे गौरव के साथ लिया जाता है । हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम में आपने बढ - चढकर हिस्सा लिया । अनोखीं धैर्यवृत्ति व शौर्यगुणों के कारण उनकी रजाकारों में एक प्रकार की निराली धाक थी । निजाम की पुलिस भी उनके अतुल बल के कारण सदैव भयांकित रहती थी । क्रान्तिकारको में वे दबंग के रूप में पहचाने जाते थे । अतः लोग इनसे बहुत डरते थे । वें मृत्यु को अपने हाथ में लेकर चलनेवाले शूरता की शान, व वीरसैनिक थे । देशभक्ति का उत्साह उनके रग-रग में भरा हुआ था । अन्याय व अत्याचार के विरूद्ध लढना वें अपना परमधर्म समझते थे, किन्तु व्यर्थ ही उन्होंने किसी को कभी कष्ट नहीं दिया । अपूर्व साहस के साथ उन्होंने रजाकारों के अत्याचारों का जमकर मुकाबला किया और कितनों को मौत के घाट उतार दिया । **'मन्त्रीजी'** का नाम सुनते ही प्रतिपक्षियों में आतंक सा छाया रहता था । लातूर तथा परिसर के गांवों में उनके क्रान्तिकारी जीवन व साहसपूर्ण कार्यों की चर्चा होती रहती थी । बार्शी (जि.सोलापूर) इस ग्राम के समीप ही स्थापित चिंचोली कॅम्प के वे प्रमुख थे । लातूर के कांग्रेसी नेता एवं आर्य समाज के पदाधिकारी श्री चन्द्रशेखर (दादा) बाजपाई, पू.उत्तममुनिजी आदि भी उनके समकालीन रहे । श्री स्वामीजी, जहां अन्य नागरिकों को देशकार्य के लिए प्रेरित करतें, वहीं कईं धनवान व्यापारियों को राष्ट्रकार्यों के लिए आर्थिक सहयोग हेतु आग्रह भी करते । यदि कोई व्यापारी स्वार्थवश सहयोग करने में

thearyasamaj.org

हिचकिचाता, तो उसे वे समझाते और मातृभूमि की सेवा का महत्व बताकर सत्कर्म में प्रवृत्त करते । फिर भी कोई इस बात को न मानें, तो वे उसे अच्छा ही सबक सिखाते एक बार ऐसा ही हुआ । लातूर का एक सधन व्यापारी समझाने बुझाने पर भी आर्थिक सहयोग के लिए तैयार नही हुआ, तब उसे लातूर के समीपस्थ हरंगुल नामक गांव में कडे रूप में दंडित किया। इतना होने पर वह तुरन्त सहयोग के लिए तैयार हुआ ।

श्री स्वामीजी एक ऐसे सच्चे देशभक्त थे, जिन्होंने **'न में कर्मफले स्पृहा'** इस सूक्ति के अनुसार निष्काम भाव से मां भारती की सेवा की । स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ-चढकर भाग लेने पर उन्होंने कभी अपने कामों की चर्चा तक नहीं की । यहां तक कि स्वाधीन्ता सैनिक की पेन्शन लेने से भी इन्कार किया । बाद में आर्यजनों व सहयोगी मित्रों के बहुत समझाने पर वे मान गये । उनसे पूछने पर कि 'आपने देश व समाज के लिए इतना बडा काम किया है, तो पेन्शन क्यों नहीं लेते?' तब वे कहते- 'मैंने कर्तव्य भावना से देश का काम किया है । माता की रक्षा करना, पुत्र का दायित्व होता हैं, मैंने पैसों के लिए कोई काम नहीं किया हैं ?' जब देश के गृहमन्त्री बुटासिंहजी थे, तब उन्हें दिल्ली आमन्त्रित किया गया । स्वामीजी के साथ मन्त्री महोदय ने चर्चा की । उनके क्रान्तिकारी कार्यों की गाथा सुनकर उन्होंने पेन्शन का फॉर्म भरने का आग्रह किया । बहुत विनंती करने पर वे इसके लिये राजी हो गये, तब पेन्शन मंजूर हुई । वही पर **स्वतन्त्रता सेनानी** का प्रशस्ति पत्र देकर स्वामीजी का गौरव भी किया गया । इस कार्य के लिए स्वामीजी ने खुद होकर पहले नही की, ग २२ वर्ष मन्त्री रहे । उनके कार्यकाल में इस समाज बल्कि भारत सरकार ने खुद होकर उन्हें सम्मानित किया

आगे चलकर स्वामीजी महाराष्ट्र शासन की ओर से स्वाधीनता सैनिक गौरव समिति के विभागीय अध्यक्ष भी बनें । उन्होंनें देश के लिए प्रामाणिक वृत्ति से कार्य करनेवाले अनेकों स्वाधीनता सैनिकों को प्रमाणपत्र देने व पेन्शन मंजुर करने हेतु शासन को सिफारिशें की । इनके प्रयासों से सही मायने में देश के लिए करनेवाले उन राष्ट्रभक्तों को योग्य न्याय मिला, जो सदैव प्रसिद्धी से पराङ्मुख रहते थे ।

देशसेवा के साथ ही स्वामीजी का वैदिक धर्म प्रचार कार्य में भी काफी योगदान रहा है । आर्य समाज (गांधी चौक) लातूर के वे लगभग २२ वर्ष मन्त्री रहे । उनके

thearyasamaj.org

कार्यकाल में इस समाज की गतिविधियां प्रगतिपथ पर थी । आर्य विचारों के प्रसार हेतु वे सतत प्रयत्नशील थे । प्रतिवर्ष मनाया जानेवाला वार्षिक उत्सव यह परिसर की आर्य जनता के लिए वैचारिक ऊर्जासंवर्धन का स्वर्णिम अवसर माना जाता था । सभा सम्मेलनों पर आमन्त्रित उद्भट वैदिक विद्वानों को सुनने के लिए शहर व देहातों के जिज्ञासु श्रोतागण हजारो की भारी संख्या में आते रहते थे । आज भी वह परम्परा जारी है । सन् १९५६ में स्वामीजी के मंत्रित्वकाल में विभागीय आर्य महासम्मेलन सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, जिसके प्रभाव से अनेकों लोग आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए । इस सम्मेलन में महात्मा आनन्द स्वामीजी सहित अन्य विद्वान मनीषी पधारे थे ।

बाद में १९७४ में उन्हीं के निर्देशन में त्रिदिवसीय मराठवाडा स्तरीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें पूर्व प्रधानमन्त्री अटलबिहारी बाजपेयी, डॉ. सत्यप्रकाशजी, पूर्व सांसद ओमप्रकाश त्यागी, शिवकुमार शास्त्री आदि विद्वान वक्ताओं को आमन्त्रित किया गया था । आर्य समाज को लोकोपयोगी बनाने में स्वामीजी अग्रणी रहे । दशहरे के पावन पर्व पर नगर में भव्य विजय-यात्रा (जुलुस) निकालने का श्रेय स्वामीजी को जाता है । आज भी नगरवासी बडे धूमधाम से प्रतिवर्ष यह दशहरा जुलूस निकालते है ।

लातूर में देववाणी संस्कृत भाषा के प्रचार हेतु स्वामीजी ने काफी प्रयास किये । **संस्कृत अध्ययन केन्द्र** चलाकर संस्कृत को जन-जन तक पहुंचाया । यद्यपि राज्य में शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी माने जानेवाले इस शहर में सम्प्रति पुराने व नये मिलाकर गुरूकुलीय स्नातकों की संख्या लगभग ६० से अधिक है । इन्हीं स्नातकों को प्रेरणा देकर स्वामीजी ने उनके माध्यम से संस्कृत का प्रचार कराया । स्वयं संस्कृत सिख न सके, लेकिन समाज में इस भाषा को बीजारोपित करने में स्वामीजी की अहं भूमिका रही हैं । भारतीय विद्या भवन की परीक्षाओं का केन्द्र भी उन्होंने चलाया । परीक्षाओं के आयोजन हेतु शहर से निधि संकलित कर छात्रों की व्यवस्था करते । साथ ही बच्चों को शुभगुणों से संस्कारित करने हेतु शिशु विहार केंद्र भी संचालित किया । इस कार्य में नगर के प्रसिद्ध व्यापारी व वेद तथा संस्कृत के अध्येता श्री सेठ बलदवाजी का उन्हें विशेष सहयोग मिलता रहा । जब भी कभी धन की आवश्यकता पडती, तब स्वामीजी बलदवाजी के पास चले जाते और उनसे प्राप्त धनराशि द्वारा संस्कृत प्रचार, पुरस्कार वा अन्य वेदप्रचार आदि कार्य करवाते । स्थानीय ज्ञानेश्वर विद्यालय में संस्कृत प्रचार कार्य हेतु उनका सदैव आना -

thearyasamaj.org

जाना रहता था । वहां के संस्कृत अध्यापक महानुभावपन्थी श्री शास्त्रीजी से उनके घनिष्ठ सम्बन्ध रहें ।

प्रसिद्ध भाषाविद् प्रो.श्री ओमप्रकाशजी होलीकर बताते है कि 'लातूर नगरी में आज संस्कृत का जो विशाल स्वरूप दिखाई दे रहा है, उसके मूल में स्वामीजी की तपस्या व पीठिका रही है । संस्कृत के प्रसार हेतु काम करनेवाला इतना समर्पित व्यक्ति मैंने पहली बार देखा है ।

बचपन से ही उन्हें व्यायाम से बहुतही लगाव था । सब काम छोडकर वे व्यायाम करते । इसलिए उनका शरीर सुडौल व वज्र के समान बन गया था ।देश के बालक व युवक शरीरबल के धनी हो, इसीलिए आर्य समाज में **श्रद्धानन्द व्यायाममन्दिर** के नाम से विशाल व्यायामशाला की स्थापना की । इन्हीं की प्रेरणा से अनेकों युवक इस व्यायामशाला में आते रहे और अपने शरीरधन को संवर्धित करते रहें । मल्लखम्भविद्या को भी स्वामीजीने प्रोत्साहन दिया । फलस्वरूप अनेकों बच्चे-बच्चियों ने विभिन्न राष्ट्रीय व प्रान्तीय क्रीडा प्रतियोगिताओं में भाग लेकर पुरस्कार भी प्राप्त किये हैं । व्यायाम शाला केअखाडे में कुस्ती लडनेवाले अनेकों मल्ल भी विभिन्न स्पर्धाओं में विजयी रहे हैं । व्यायामशाला में जब भी किसी साहित्य की कमी हो, तब स्वामीजी तुरन्त शहर के दानी व्यापारी सेठ के पास पहुंच जाते और उन्हें वह साहित्य दिलवाने हेतु प्रोत्साहन देते और समय पर सभी प्रकार का साहित्य उपलब्ध भी होता । लातूर शहर के साथ ही समीपस्थ कव्हा नामक ग्राम में भी स्वामीजी ने व्यायामशाला खोलने हेतु पूर्व विधायक श्री शिवाजीराव पाटील को प्रेरित किया और इसके लिए अपनी ओर से दान राशि भी भेट की । इस तरह स्वामी स्वात्मानन्दजी आर्य समाज के माध्यम से शारीरिक उन्नति का पथ प्रशस्त करते रहे ।

मन्त्रीजी (रामचन्द्रजी) का गृहस्थाश्रम अल्पकालीक ही रहा । श्रीमती अनसूयाबाई यह उनकी सहधर्मिणी का नाम था । इन्हें कोई सन्तान नहीं हुई । किसी अनाथ बालिका को बचपन में ही गोद लिया और उसका **शन्नोदेवी** यह नामकरण कराया गया । इस कन्या को शुभसंस्कार, उंची शिक्षा आदि दिलाकर वह बडी होने पर उसका डोणगांव के होनहार डॉक्टर युवक दिगम्बर मुले से विवाह कराया । सम्प्रति यह मुले परिवार उदगीर में फलता-फूलता हुआ प्रगतिपथ पर विराजमान है । छोटे दोनों भाई श्री लक्ष्मणराव व पुंडलिकराव भी अपने भ्राताश्री के पदचिह्नों पर चलते रहें । इन्होंने भी हैदराबाद स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया और आर्य समाज

thearyasamaj.org

के सम्पर्क में आकर वैदिक विचारों से जुडे रहे । अपने बडे भाई से प्रेरणा पाकर ही अनुज स्वा.सै.लक्ष्मणराव बिदरकर ने अपनी कन्याओं को पढाया और उनके अन्तर्जातीय विवाह कराये ।

रूग्णावस्था के कारण पत्नी श्रीमती अनसूयाबाई अकस्मात् ही परलोक सिधार गयी । तब वैराग्यवृत्ति धारण कर मन्त्रीजी स्वाध्याय, चिन्तन, ध्यान-धारणा आदि कार्यों में संलग्न हुए । आगे उत्तर भारत की ओर चल पडे । दयानन्द मठ, दीनानगर (पंजाब) में कईं माह तक साधना करते रहें । वहीं पर आर्य जगत् के वीतराग संन्यासी **स्वामी** सर्वानन्दजी का शुभ सान्निध्य पाकर उनसे संन्यास दीक्षा ली और **स्वामी स्वात्मानन्दजी** बन गये । कुछ समय तक वे हिमाचल के चंबा स्थित मठ में भी रहें । बाद में हरिद्वार (उ.प्र.) के समीपस्थ गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में भी आपने कुछ काल तक निवास किया । पर भोजन व भण्डार विभाग के प्रमुख बनकर आप गुरूकुलीय व्यवस्था में सहयोग देते रहे और ब्रह्मचारियों को राष्ट्रभक्ति व सुसंस्कारों का पाठ पढाते रहें ।

इस तरह से कईं वर्ष उत्तर भारत में रहकर स्वामीजी महाराष्ट्र आये । लातूर के समीपस्थ कव्हा नामक ग्राम में छोटासा आश्रम (कुटिया) बनाकर तपस्वी जीवन व्यतीत करने लगे । तब भोजनादि की असुविधा के कारण होनेवाली अडचनों को देखकर आर्यजनों ने उन्हें आर्य समाज में रहने की विनती की । अतः उनके आग्रह पर वे आर्य समाज में रहने लगे । यहां पर सादगीपूर्ण विरक्त वृत्ति धारण कर वे पूर्व की भांति वेदप्रचारादि कार्यों में संलग्न होकर आर्यों को प्रेरणा देते रहे ।

यज्ञकार्य में उन्हें विशेष रूचि थी । अपनी आर्य समाज में भव्य यज्ञशाला बनें , यह उनकी तीव्र अभिलाषा थी । इसके लिए उन्होंने अपनी ओर से लगभग ५० हजार रूपयों की राशि भी दान में दी । उनके चले जाने के बाद पदाधिकारियों ने एक विशाल यज्ञशाला निर्माण किया हैं

किसी कवि ने कहा - **क्षमा वीरस्य भूषणम्** । अर्थात् क्षमाशीलता यह वीरपुरूषों का आभूषण होती है । जुलमी रजाकारों के अत्याचारों से लोहा लेने वाले नरवीर स्वात्मानन्दजी में प्रखर शौर्य के साथ ही अनूठी क्षमावृत्ति भी थी । शहर के किसी प्रसिद्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति द्वारा एक बार बडी गलती हो गयी । एक मासूम महिला की असहायता का फायदा उठाकर उसने अत्याचार किये । नाजायज गलत सम्बन्ध प्रस्थापित किये, परिणाम वही हुआ, जो होना था । पेट में पलनेवाले बच्चें को अपनाने व उस महिला को आश्रय देने के लिए वह तैयार नहीं हुआ,

thearyasamaj.org

तब वह स्त्री स्वामीजी के पास आयी और उसने वह सारी दुःखभरी कहानी सुना दी । उस पीडित महिला की वेदना सुनकर स्वामीजी ने उसे आश्वस्त किया । अपने कार्यकर्त्ताओं से उन्होंने उस अपराधी व्यक्ति की तलाश कर सामने लाने का आग्रह किया । स्वामीजी के प्रभाव से वह व्यक्ति उनके चरणों में आकर लीन हो गया, उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया व क्षमा मांगी । स्वामीजी ने भी उसे अपूर्व क्षमादान करते हुए छोड दिया । उस महिला को किसी अज्ञात सुरक्षित स्थान पर रखकर पिता की भांति उसकी देखभाल की । पूरा समय बीतने पर जब बच्चा पैदा हुआ, तब उस बच्चें की पालन व्यवस्था का भार किसी अन्य परिवार पर सौंप दिया और उस महिला को समाज में प्रतिष्ठापूर्वक जीने का अधिकार प्रदान किया । ऐसे थे क्षमा, करूणा व दया के पुजारी श्री स्वामी स्वात्मानन्दजी !

सभी प्रकार के लोगों से उनके मधुर सम्बन्ध थे । उनका क्रान्तिकारी जीवन ही उन्हें प्रथितयश गौरव दिलाने में प्रर्याप्त रहा । सर्वश्री स्वा.सै. वासुदेवराव होलीकर, स्वा.सै. शंकरराव जडे, स्वा.सै. निवृत्तिराव होलीकर, स्वा.सै.चन्द्रशेखर बाजपाई, पू. उत्तममुनिजी, हरिश्चन्द्र गुरूजी, हरिश्चन्द्र पाटील आदियों से उनका सदैव विचार विमर्श होता था । धनंजय पाटील, परांडेकर, पाराशर, तेरकर, प्रा. नरदेव गुडे, प्रा. विजय शिंदे, प्रा. मदनसुरे, प्रो. होलीकर, प्रा. दत्तात्रय पवार, हालिंगे बंधू, कैप्टन डॉ. भारती जाधव आदियों पर उनका विशेष स्नेहाशीष रहा श्री महेन्द्रकर सहित अनेकों आर्य परिवार स्वामीजी श्रद्धाभाव भोजनादि के व्यवस्था करते थे ।

स्वामीजी जीवन के अन्त तक वे आर्य समाज लातूर में रहें । यहां का निवास भवन आज भी स्वामीजी के नाम से पहचाना जाता है । लेखक को भी छात्रावस्था उनका प्रेमाशीर्वाद मिला व उनकी सेवा का सुअवसर प्राप्त हुआ । वृद्धावस्था में आर्य समाज के पदाधिकारियों, आर्यजनों व परिजनों ने उनकी की श्रद्धाभावस सेवा शुश्रूषा की । ऐसे महान तपोनिष्ठ महात्मा ने दि. ७ अगस्त १९९४ को अपनी जीवन यात्रा समाप्त की । स्वामीजी को शत् शत् अभिवादन !

-श्रुतिगन्धम्, ब-१३ विद्यानगर,
परली-वैजनाथ

thearyasamaj.org

आर्य भामाशाह महाशय धर्मपालजी द्वारा प्रदत्त दो करोड रु. से

# कोझीकोड (केरल) में वेद-अनुसन्धान केन्द्र का शिलान्यास

## शंकराचार्य की धरती पर दयानन्द के वेदविचारों का शंखनाद

## नवनिर्माण हेतु महाशयजी और भी देंगे सवा सौ करोड रुपये

## महाराष्ट्र सभा द्वारा एक लाख का सहयोग

देश विदेश के लाखों वेदप्रेमियों, विशेषकर आर्यजनों को स्वतन्त्रता दिवस (१५ अगस्त २०१४) पर टी.वी. चैनलपर केरल में सम्पन्न हो रहे ऐतिहासिक सामूहिक यज्ञानुष्ठान तथा वैदिक अनुसन्धान केन्द्र के शिलान्यास समारोह को देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई होगी तथा महर्षि के असंख्य शिष्यों, आर्य विद्वानों व कार्यकर्ताओं को भी परम सन्तोष व आनन्द की अनुभूति हुई होगी कि अद्वैत विचारों के प्रवर्तक आचार्य शंकर की जन्मभूमि केरल प्रांत में अब महर्षि दयानन्द प्रणित विशुद्ध वैदिक विचारों का शंखनाद हो रहा है।

वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द की सर्वकल्याणकारिणी विचारधारा को विश्वभर में फैलाने हेतु पूर्णतः समर्पित आर्य जगत् की दानवीर विभूति, आर्य भामाशाह महाशय धर्मपालजी (एम.डी.एच.मसाले) द्वारा प्रदत्त दो करोड की राशि से केरल के कोझीकाड नगर से १५ कि.मी. दूरी पर २ एकड भूमि खरीद ली गयी। केरल में ऋषि के वैदिक विचारों को प्रचारित करने में सर्वतोमना समर्पित व्यक्तित्त्व आचार्य श्री एम.आर.राजेशजी, जो कि **'काश्यप वैदिक रिसर्च फौण्डेशन'** के कुलपति हैं । इनके पूरे सहयोग से **वेद अनुसंधान केन्द्र (वेदाश्रम)** शुरू होने जा रहा है। इस केंद्र का शिलान्यास महाशय धर्मपालजी के शुभ करकमलों से बहुत ही भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ ।

इससे पूर्व श्री राजेशजी के शुभप्रयासों से कुल २००८ याज्ञिकों ने बडी श्रद्धा के साथ सामूहिक रुप से यज्ञानुष्ठान किया हैं । इस यज्ञ में सभी याज्ञिक स्त्री-पुरुष पारम्परिक वेशभूषा में विराजमान थे। स्वतंत्र लघु यज्ञकुण्डों में वे साथ लाये घी, समिधा, सामग्री आदि की श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ देते नजर आये। इस सुन्दर परिदृश्य को देखकर दर्शकों के आनन्द का ठिकाना न रहा ! वैसे तो इस विशाल यज्ञ में लगभग ३००० यजमान सम्मिलित होने वाले थे, किन्तु स्थानाभाव के कारण केवल २००८ यजमानों ने ही यज्ञ किया । इस विशाल यज्ञ के ब्रह्मापद को यज्ञप्रसारक श्री राजेशजी ने सुशोभित किया । इससे पूर्व महाशयजी के शुभ करकमलों से ओ३म् ध्वजा फहराई गयी।

thearyasamaj.org

सम्प्रति पूरे भारत सहित विश्व के कई देशों में आर्य समाज का प्रचारकार्य हा रहा है। विशेषत: उत्तरी भारत के दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उ.प्र., राजस्थान, म.प्र., उडीसा, बिहार, बंगाल आदि प्रान्तों तथा दक्षिण के आन्ध्र, महाराष्ट्र व कर्नाटकादि प्रान्तों में ऋषि दयानन्द की वैदिक ज्ञानज्योति प्रकाश्यमान है, किन्तु दक्षिण पूर्व के केरल राज्य, जिसे कि अद्वैत वेदांती विचार के प्रवर्तक आचार्य शंकर की जन्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है तथा जहां पर इस समय बडे पैमाने पर ईसाई मत का प्रचार हो रहा है। इस बात को ध्यान में रखते हुए यहाँ पर वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार की परमावश्यकता महसूस हो रही थी । गत १५ वर्षों से श्री एम.आर. राजेश जैसे ४५ वर्षीय उत्साही आर्ययुवक वेदधर्म का सन्देश घर-घर पहुंचाने में संलग्न हैं । प्रांतीय भाषा मलयालम में उन्होंने लगभग ५० पुस्तके लिखी हैं । 'काश्यप वैदिक रिसर्च फौण्डेशन' के माध्यम से श्री राजेशजी यज्ञीय अनुष्ठान को समाज के कोने-कोने तक ले गये है । आज लगभग १० हजार से भी अधिक परिवार ऐसे हैं, जहां प्रतिदिन ऋषिनिर्दिष्ट पद्धत्यनुसार अग्निहोत्र कराया जाता है । 'वेद का पवित्र ज्ञान मानव-मात्र के लिए खुला है। जाति या वर्णविद्वेषादि भेदभावों से दूर रहकर वेदज्ञान सभी के लिए समान शिक्षा व अधिकार प्रदान करता है', इस तरह की दयानन्दीय मान्यताओं को प्रस्तुत करने में श्री एम.आर.राजेश अपने परिवार व मित्रजनों सहित अहर्निश जुटे हैं । इनके उत्साह को देखते हुए महाशय धर्मपालजी अपनी करोडों की सम्पत्ति ऐसे ईश्वरीय कार्यों में लगाने हेतु तत्पर हुए। इस दृष्टि से कोझीकोड में वेदाश्रम के शिलान्यास समारोह की यह घटना ऐतिहासिक प्रतीत होती है ।

इस समारोह में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, श्री धर्मपाल आर्य (आर्ष प्रकाशन ट्रस्ट), मा.सांसद श्री सत्यपालसिंहजी, स्वामी प्रणवानन्दजी सरस्वती, स्वामी ऋतस्पतिजी, स्वामी सदानन्दजी, महाराष्ट्र सभा के मार्गदर्शक डॉ.ब्रह्ममुनिजी, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर आदि मंच पर उपस्थित थे । इन मान्यवरों ने सभा को सम्बोधित किया । इस अवसर पर विद्वानों व संन्यासी वानप्रस्थियों का सम्मान भी किया गया ।

समारोह में महाशयजी ने प्रस्तावित वेद अनुसन्धान केन्द्र (वेदाश्रम) के नवनिर्माण हेतु रु.१,११,११,१११/- (एक करोड, ग्यारह लाख, ग्यारह हजार, एक सौ ग्यारह रुपयों) की दानराशि देने की घोषणा की । डॉ.ब्रह्ममुनिजीने महाराष्ट्र सभा द्वारा १ लाख रुपयों के सहयोग की घोषणा की तथा डॉ.श्रीमती विमलादेवी काले एवं परिवार (परली) की ओर से ५१ हजार रुपयों के दान की घोषणा की । अन्य महानुभावों ने भी अपनी ओर से सहयोग देने का निर्णय

thearyasamaj.org
लिया ।

इस विशाल समारोह में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उ.प्र., छत्तीसगढ, गुजराथ, म.प्र., झारखण्ड, बिहार, उडीसा, बंगाल, आंध्र, कर्नाटक, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों से भारी संख्या में आर्यजन सम्मिलित हुए । महाराष्ट्र से डॉ.ब्रह्ममुनिजी व उग्रसेन राठौर सहित सर्वश्री माधवरावजी देशपांडे, लखमसीभाई वेलानी, प्रो.ओमप्रकाशजी होलीकर, अमृतमुनिजी, सोममुनिजी, विज्ञानमुनिजी, नादब्रह्ममुनिजी, विवेकमुनिजी, अनंत लोखंडे, पद्माकर लोखंडे, रामेश्वर राऊत आदि सम्मिलित हुए । रेणापुर व लातूर के कार्यकर्त्ताओं ने समारोह की सफलता हेतु सहयोग दिया।

* * *

प्रस्तुति-अनंत लोखंडे,
सीताराम नगर,लातूर

वृष्टि समाचार

## प्रान्तीय सभा व आर्य समाज द्वारा परली में

# 'पर्जन्य वृष्टि यज्ञ' - चौथे दिन घमासान वर्षा

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज परली-वै. के संयुक्त तत्वावधान में गत ६ से ११ अगस्त २०१४ के दौरान विशाल स्तर **'पर्जन्य वृष्टि यज्ञ'** का आयोजन किया गया । पूर्णतया शास्त्रोक्त विधिद्वारा सम्पन्न हुए इस यज्ञ में ४ क्विंटल गोघृत, हैदराबाद से मंगाई गई २ क्विंटल विशुद्ध सामग्री तथा लगभग १० ट्रॅक्टरों से भरी विभिन्न औषधि वनस्पतियों की समिधाएं आहुत की गयी । इस यज्ञ के ब्रह्मापद को वृष्टि विशेषज्ञ डॉ.कमलनारायणजी आचार्य ने सुशोभित किया । स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल के अध्यापक व ब्रह्मचारियों ने वृष्टि सूक्तान्तर्गत वेदमन्त्रों का पाठ किया। प्रतिदिन प्रात: ७ से १० तक एवं दोपहर/सायं. ३ से ६ तक लगातार यज्ञ चलता रहा। यज्ञ के सफल परिणाम चौथे दिन (दि.९ अगस्त) दिखाई दिये । दोपहर के सत्र में यज्ञ चल रहा था, तभी आकाश में सर्वत्र बादल एकत्रित हुए और लगभग एक घंटा तक घमासान वर्षा हुई । परली शहर व परिसर के १०० कि.मी. के परिधि में सर्वत्र जमकर बादल बरसे । लगभग दो महिनों से बारिश बिल्कुल भी नहीं थी । चिन्ताग्रस्त कृषक भाई व सामान्य लोक वर्षा की प्रतीक्षा में थे । ऐसे में पर्जन्यवृष्टि के उत्साहवर्धक सुपरिणाम आने से लोगों में खुशी की लहर छा गयी और आर्य समाज व उसके मन्तव्यों तथा पर्जन्यवृष्टि यज्ञ के प्रति लोगों में विश्वास बढता नजर आया । आचार्य कमलनारायणजी के साथ ही वैदिक विद्वान प्रो.डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार(दिल्ली) ने भी

thearyasamaj.org

श्रोताओं को मार्गदर्शन किया तथा पं.सुखपालजी आर्य ने भजन प्रस्तुत किये । सभा के मार्गदर्शक डॉ.ब्रह्ममुनिजी की प्रेरणा से मंत्री राजेन्द्र दिवे, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, संरक्षक (प्रधान) रामपालजी लोहिया, लक्ष्मणराव आर्य, प्रभुलालजी गोहिल, जुगलकिशोर लोहिया, जयपाल लाहोटी, गिरधारीलालजी गट्टाणी, जयकिशोरजी दोंडिया, पं.प्रशांतकुमार शास्त्री, रंगनाथजी तिवार, देविदासराव कावरे, गोवर्धनजी चाटे, प्रा.अरूण चव्हाण, तानाजी शास्त्री, नयनकुमार आचार्य, वीरेंद्र शास्त्री, कर्ममुनिजी, गित्ते आदि कार्यकर्ता सक्रिय हो गये और एकजुट होकर अल्पसमय में ही निधिसंकलन, यज्ञीय व्यवस्था, यजमानों की नियुक्ति, यज्ञ का प्रचार, जनता को आवाहन करना इत्यादि कार्यों को अपूर्व नियोजन के साथ निभाया । इस यज्ञ में परली के लगभग ५० से अधिक प्रतिष्ठित व्यापारी, उद्योजक कृषक आदि यजमान के रुप में सोत्साह सम्मिलित हुए । यज्ञ के अंतिम दिन पूर्णाहुति के बाद परली तालुके के मांडवा, मरलवाडी, सारडगांव आदि देहातों में बढिया बारिश के समाचार प्राप्त हुए ।

# सम्भाजीनगर में भारत समृद्धि महायज्ञ

## अन्तिम दिन जमकर बादल बरसें

आर्य समाज, सम्भाजीनगर (औरंगाबाद) के तत्वावधान में दि.१३ अगस्त से १७ अगस्त के दौरान '**भारत समृद्धि महायज्ञ (वृष्टियज्ञ)**' का सफलतापूर्वक आयोजन हुआ । इस यज्ञ के ब्रह्मापद को पाणिनी आर्ष कन्या गुरुकुल वाराणसी की विदुषी आचार्या डॉ.नन्दिताजी शास्त्री ने विभूषित किया तथा पौरोहित्यकर्म पर्यावरण विशेषज्ञ डॉ.कमलनारायणजी आचार्य (रांची) ने किया । प्रतिदिन प्रातः ८.३० से ११ एवं सायं.४.३० से ७ तक लगातार वैदिक वृष्टिमन्त्रों के उच्चारण में सुगन्धित द्रव्यसामग्री से आहुतियां पडती रही । वेदपाठ आचार्याजी के साथ पधारी ४ ब्रह्मचारिणियों ने किया ।

नगर के खडकेश्वर महादेव मन्दिर के प्रांगण में आयोजित इस महायज्ञ में मुख्य यजमान के रुप में प्रसिद्ध उद्योजक श्री सीतारामजी अग्रवाल सम्मिलित हुए । साथ ही यज्ञ के दौरान लगभग ११० यजमानों ने सपत्नीक सहभाग लेकर श्रद्धापूर्वक आहुतियां दी । डॉ.कमलनारायणजी आचार्य के निर्देशन में पूर्णरुपेण वैज्ञानिक पद्धति को अपनाते हुए किये गये इस यज्ञानुष्ठान की सफलता पूर्णाहुति के दिन दृष्टिगोचर हुई । दि.१७ अगस्त को संध्या समय नगर व परिसर में सभी जगह जोरदार पर्जन्यवृष्टि हुई । लगातार ३ घन्टे तक बादल जमकर बरसने से

thearyasamaj.org

आयोजकों के साथ ही सामान्य जनता भी आनन्दविभोर हो उठी । समापन के पूर्व दिन में भी कईं जगह वर्षा हुई । यज्ञानुष्ठान के अतिरिक्त उपरोक्त विद्वानों के व्याख्यानों का श्रोताओं ने लाभ उठाया ।

**डॉ.महावीरजी के विचारों का प्रभाव**

भारत समृद्धि महायज्ञ के दौरान दि. १६ व १७ अगस्त को उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं वेदों के उद्भट विद्वान डॉ.महावीरजी आचार्य पधारे थे । उनके ओजस्वी विचारों से श्रोतागण काफी प्रभावित हुए । आचार्यजी ने अपने विभिन्न प्रवचनों में देश की सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक स्थिति पर मार्मिक शब्दों में प्रकाश डाला और बदलते परिवेश में वैदिक सिद्धान्तों की आवश्यकता पर बदल दिया। उनके सारगर्भित, मधुर व हृदयस्पर्शी ज्ञानामृत से श्रोताओं ने सानन्द तृप्ति पाई ।

यज्ञ समारोह की सफलता हेतु आर्य समाज के प्रधान श्री जुगलकिशोर दायमा, मन्त्री दयाराम बसैये, उपप्रधान सौ.सविता जोशी, वसंतभाई भानुशाली, कोषाध्यक्ष एड्.जोगेन्द्रसिंह चौहान ने प्रयास किये ।


चलो गुंजोटी ! ।। ओ३म् ।। हु. वेदप्रकाश अमर रहें !

**महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में**

**आर्य समाज गुंजोटी जीर्णोद्धार समिति के द्वारा गुंजोटी में आयोजित**

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के क्रान्तिकारी आर्य युवा बलिदानी

**- हुतात्मा वेदप्रकाश बलिदान समारोह -**

**आर्य समाज गुंजोटी भवन जीर्णोद्धार व उद्घाटन समारोह**

**- यजुर्वेद पारायण यज्ञ व विविध कार्यक्रम -**

दि. २४, २५, २६ नवम्बर २०१४ (सोम, मंगल, बुधवार)

**सस्नेह निमंत्रण**

आमन्त्रित विद्वान

* पू. आचार्य स्वामी बलदेवजी (प्रधान, सार्व. आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली)
* मा. श्री प्रकाशजी आर्य (मन्त्री, सार्व. आर्य प्रतिनिधि सभा,दिल्ली)
* पू. श्री स्वामी धर्मानन्दजी (प्रमुख, गुरूकुल आमसेना,उडीसा)
* मा.प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु (आर्य इतिहास गवेषक, अबोहर -पंजाब)
* मा.प्रो.डॉ. धर्मवीरजी (का.प्रधान परोपकारिणी सभा, अजमेर)
* मा.पं. भानुप्रकाशजी शास्त्री (आर्य भजनोपदशेक बरेली-उ.प्र.)

इस त्रीदिवसीय समारोह में आप सभी भारी संख्या में आंमन्त्रित हैं ।
पधारकर कार्यक्रमों को सफल बनावें ।

thearyasamaj.org



# संसद में स्वामी दयानन्द के विचारों की गूंज

बागपत (उ.प्र.) से नवनिर्वाचित आर्य सांसद डॉ. सत्यपाल सिंहजी (पूर्व पुलिस कमीशनर, पुणे-मुम्बई) ने गत दि. २२ जुलाई २०१४ को लोकसभा में शून्यकाल के दौरान महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी विचारों व कार्यो को प्रस्तुत किया । सायंकाल ६.३० से ७.३० के मध्य लोकसभा टी.वी.चैनल पर देश की करोडों जनता ने यह सीधा प्रसारण देखा । विभिन्न मुद्दों की चर्चा जैसे ही समाप्त हुई, तब ऋषिभक्त एवं वैदिक प्रवक्ता श्री सत्यपालजी सिंहजी खडे हुए और उन्होंने सदन में सभी के सम्मुख महर्षि द्वारा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम ने दिये गये योगदान व कार्यों की चर्चा की । सम्प्रति विभिन्न समस्याओं के निवारण हेतु स्वामीजी के विचारों की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि वे महर्षि द्वारा बताये हुए वैदिक विचारों पर देश को चलाये, जिससे सारा देश सही अर्थों में उन्नत हो सकता है । इस अवसर पर उनके समीप ही सीकर (राज.) से नवनिर्वाचित आर्य सांसद स्वामी सुमेधानन्दजी भी बैठे थे ।

## 'हु. धर्मप्रकाशजी का बलिदान प्रेरणाप्रद'-डॉ.ब्रह्ममुनिजी

'वैदिक धर्म व राष्ट्र की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करनेवाले कान्तिकारी आर्यवीर हुतात्मा धर्मप्रकाशजी की संघर्षमयी जीवनगाथा व अमर बलिदान आनेवाली नई पीढी के लिए प्रेरणादायी रहेगा । उनके पदचिह्नों पर चलते हुए हमें आर्य विचारों को जन-जन पहुंचाने हेतु कृतसंकल्पित होना चाहिए,' यह विचार थे सार्वदेशिक आर्य प्र.सभा के उपप्रधान डॉ.श्री ब्रह्ममुनिजी के ।

गत २७ जून २०१४ को बसवकल्याण जि.बीदर (कर्नाटक) में आर्य समाज हुतात्मानगर के तत्वावधान में हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के अमर सेनानी का ७६ वां. बलिदान दिवस उत्साहपर्वूक मनाया गया । इस अवसर पर श्री मुनिजी प्रमुखातिथि के रूप में मार्गदर्शनपर रहे थे । समारोह की अध्यक्षता प्रान्तीय सभा के मन्त्री श्री सुभाषजी आष्टीकर ने की । मंचपर सर्वश्री प्रो.ओमप्रकाशजी विद्यालंकार (होलीकर), डॉ.नयनकुमार आचार्य, पं. सुधाकरजी शास्त्री, स्वा.सै.गोकुलसिंह चव्हाण, प्रधान नारायणरावजी बुन्ना,

thearyasamaj.org

वेदप्रचारक सुभाषजी सुत्रावे, पं. माणिकरावजी लाड आदि विराजमान थे। सभी वक्ताओं ने धर्मप्रकाशजी के प्रति अपनी भावपूर्ण श्रद्धांजलियां समर्पित कर वैदिक विचारों को प्रचारित करने तथा आर्य समाज की गतिविधियों को बढाने के लिए तत्पर रहने का आवाहन किया। प्रो.होलीकरजीनें हुतात्मा धर्मप्रकाशजी के बलिदानसे राष्ट्र में नवक्रान्ति का संचार होकर देश का भविष्य उज्वल बनने की आशा व्यक्त की। श्री नयनकुमारजी ने भी सभा को सम्बोधित किया। समारोह से पूर्व बसवकल्याण नगर में भव्य जुलुस निकाला गया। हु. धर्मप्रकाश चौक में सभी आर्यों ने ओ३म् ध्वजा फहराकर उस महान आर्य बलिदानी के प्रति सामूहिक रूप से श्रद्धासुमन अर्पण किये। तत्पश्चात् धर्मप्रकाशजी की स्मृति में चलाये जा रहे आर्य विद्यालय में यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसका पौरोहित्य पं. सुधाकरजी शास्त्री ने किया। यज्ञ के पश्चात् बच्चों को श्री मुनिजी व शास्त्रीजी ने संबोधित किया गया। जुलूस में आर्यों ने जोश के साथ भजन व गीत गाये। इस बलिदान समारोह में कर्नाटक व महाराष्ट्र की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारी, कार्यकर्त्ता एवं महिला, पुरूष व बच्चे सम्मिलित थे। समारोह का संचालन श्री संजीव जाधव ने किया तथा श्री सुत्रावेजी ने धन्यवाद व्यक्त किये।

# रोजड में एकवर्षीय सघन साधना शिविर

आर्य जगत् के प्रसिद्ध आध्यात्मिक ज्ञानप्रसार संस्थान **दर्शन योग महाविद्यालय, आर्य वन रोजड (गुजरात)** में आगामी १ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५ तक **एकवर्षीय सघन साधना शिविर** का आयोजन हो रहा हैं। अज्ञातवात में रहकर लगभग डेढ वर्ष तक मौन साधना में अपना जीवन व्यतीत करनेवाले महाविद्यालय के आचार्य श्री स्वामी ब्रह्मविद्याविद सरस्वती की अध्यक्षता में तथा ब्रह्मयोगी पू. स्वामी सत्यपतिजी की आशीर्वाद छाया में यह दीर्घकालिक शिविर होगा। इस शिविर में योगाभ्यास पथारोहण, प्रगति, सकलक्लेश प्रक्षालन (अन्तकःकरण परिशुद्धि), शाश्वत सुख-शान्ति एवं आत्मा व परमात्मा की प्राप्ति हेतु वैदिक दर्शनों के माध्यम से प्रयत्न किये जाएंगे। सभी प्रकार की जिम्मेदारियों से विमुक्त शिविरार्थी को शिविर में किसी भी प्रकार का अवकाश न लेते हुए मौन धारण कर अध्यात्ममय जीवन बिताना होगा। साथ ही प्रवेशार्थी योग, सांख्य व वैशेषिक में से किसी एक दर्शन का अध्येता हो। इच्छुक जन मो. ०९४०९४१५०११, ०९४०९४१५०१७ व फोन नं. ०२७७०-२८७४१८ पर सम्पर्क कर अधिक जानकारी प्राप्त करें।

thearyasamaj.org

# स्वामी सवितानन्दजी 'आर्य पुरस्कार' से सम्मानित

आर्य जगत के कर्मठ वेदप्रचारक स्वामी सवितानन्दजी सरस्वती (पं. गोविन्दप्रसाद आर्य ) द्वारा किये गये वैदिक धर्म प्रचार कार्यों को देखते हुए उन्हें स्व.श्री चौधरी मित्रसेनजी आर्य की स्मृति में रखा गया **विशिष्ट आर्य सम्मान पुरस्कार** प्रदान किया गया । गुरूकुल आमसेना उडीसा के ४७ वें वार्षिकोत्सव पर उन्हें पुरस्कार राशि व अभिनन्दन पत्र देकर गौरवान्वित किया गया । श्री स्वामीजी युवावस्था से ही वैदिक साहित्य अध्ययन के साथ आर्य समाज के प्रचार व प्रसार कार्य में जुटे रहे । उडीसा, बिहार, बंगाल, झारखंड आदि प्रान्तों के छोटे-बडे क्षेत्रों में आप कार्यरत थे । सम्प्रति आयु के ७८ वे वर्ष में भी वे उतने ही उत्साह के साथ आर्य समाज रांची (झारखंड) को केन्द्र बनाकर मिशनरी भाव से वेदधर्म प्रचार सेवा में संलग्न हैं । उनका अभिनन्दन व दीर्घायु की कामना ।

# कन्धमाल में गुरूकुल का वार्षिकोत्सव

स्वामी धर्मानन्दजी के निर्देशन में कन्धमाल (उडीसा) जैसे ईसाई बहुल क्षेत्र में चल रहे **ओमानन्द वैदिक छात्रावास (गुरूकुल)** का वार्षिकोत्सव गत ९ मई २०१४ को उत्साह के साथ मनाया गया । समारोह की अध्यक्षता स्वामी धर्मानन्दजी की । इस उपलक्ष्य में सात दिवसीय युवा चरित्र निर्माण शिविर, अधिवेशन, यज्ञ, प्रवचनादि कार्यक्रम सम्पन्न हुए । स्वामीजी के आशीर्वचनों के साथ ही पं. विशिकेशनजी शास्त्री, मनुदेव वाग्मी, कृष्णमोहन, पाणिग्रही, आचार्य श्रद्धानन्द ने मार्गदर्शन किया ।

# आर्ष गुरूकुल आबूपर्वत का वार्षिकोत्सव

गत ३१ मई, १ व २ जून २०१४ को आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत का २४ वां वाषिकोत्सव एवं वेदारम्भ संस्कार समारोह उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर आयोजित वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मापद को प्रो.डॉ.कमलेशकुमारजी शास्त्री ने सुशोभित किया तथा आचार्य श्री ओमप्रकाश आर्य ने उपस्थितों को सम्बोधित किया ।

गुरूकुल न्यास के अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती ने गुरूकुल के कार्यविस्तार पर विचार व्यक्त कर सभी के प्रति धन्यवाद व्यक्त किये ।

thearyasamaj.org

# अजमेर में ऋषि बलिदान समारोह (ऋषिमेला)

परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में आगामी ३१ अक्टूबर, १ व २ नवम्बर २०१४ को **महर्षि दयानन्दजी का १३१ वां बलिदान समारोह** मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में आयोजित भव्य ऋषि मेले पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ (२७ अक्टूबर से २ नवम्बर), वेदगोष्ठी, चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता, सम्मान समारोह आदि कार्यक्रम सम्पन्न होंगें। इस समारोह में आर्य जगत् के प्रकाण्ड विद्वान् व कर्मठ मनीषी विभूतियां सर्वश्री प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासुजी (अबोहर), आचार्य विजयपालजी (झज्जर), स्वामी ऋतस्पतिजी (होशंगाबाद), डॉ. ब्रह्ममुनिजी (महाराष्ट्र), डॉ. सुरेन्द्रपालजी (कुलपति गुरूकुल कांडी वि.वि.), डॉ. वेदपालजी (बडौत), आचार्या सूर्यादेवी (शिवगंज), डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, डॉ. रामप्रकाशजी (कुरूक्षेत्र), आचार्य विरजानन्दजी (झज्जर), सत्येन्द्रसिंहजी (मेरठ), डॉ. कृष्णपालसिंहजी (जयपुर), सत्यानंदजी आर्य (दिल्ली), प्रकाशजी आर्य (महू), पं. सत्यपालजी पथिक (अमृतसर) आदियों को आमन्त्रित किया गया है। ऋग्वेद पारायण यज्ञ के ब्रह्मापद को डॉ. वागीशजी (मुम्बई) सुशोभित करेंगें। इस वर्ष की वेदगोष्ठी के लिए **भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद** यह विषय रखा गया है। विद्वद्गण अपने शोधपत्र दि. १५ अक्तूबर २०१४ तक भेज सकते हैं। अतः इस विशाल ऋषि मेले पर आर्यजनों को भारी संख्या में पधारने का अनुरोध सभा के प्रधान श्री गजानन्दजी शास्त्री, का. प्रधान डॉ. धर्मवीरजी व मन्त्री श्री ओममुनिजी ने किया है।

# अकोला में श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य प्र.सभा म.प्रदेश व विदर्भ अन्तर्गत प्रसिद्ध आर्य समाज अकोला का श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव दि.१० से १७ अगस्त के दौरान उत्साह के साथ मनाया गया। इस पर्व पर मार्गदर्शन हेतु वैदिक विद्वान आचार्य पं. भद्रकामजी वर्णी (नई दिल्ली) एवं आर्य भजनोपदेशक पं. कर्मवीरजी आर्य (लुधियाना-पंजाब) को आमन्त्रित किया गया था। इन विद्वानों के व्याख्यान व भजन कार्यक्रम प्रातः ८.३० से १०.३०, दोपहर ३ से ५ तक व रात्रि में ७.३० से १० तक होते रहे। वेदपारायण यज्ञ में शहर के यजमान दम्पतियो श्रद्धापूर्वक आहुतियां प्रदान की। स्कूली बच्चों के लिए संस्कार प्रबोधन कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। श्रावणी पर्व की सफलता हेतु प्रधाना डॉ. मंजुलता विद्यार्थी, का. प्रधान डॉ. हरिश्चंद्र आलिमचंदानी, मन्त्री डॉ.दिलीप मानकर, प्रभारी मन्त्री रमेशचंद्र घारू, वेदप्रचारमंत्री नवल टावरी व पदाधिकारियों ने प्रयास किये।

thearyasamaj.org

# मुंबई में जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा, मुंबई के तत्त्वावधान में गत ११ से १८ मई २०१४ के दौरान मुंबई के आर्यसमाज सांताक्रुज में **'आदर्श जीवन निर्माण शिविर'** सम्पन्न हुआ। इसमें श्री धर्मेन्द्र आर्य, प्रशांत आर्य, हरेन्द्र आर्य आदियों ने शिविरार्थी बच्चों को सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, ज्यूडो कराटे, योगासन, स्तूप, मल्लखंभ व्यायाम विविध क्रीडा आदियों का प्रशिक्षण दिया। शिविर का समापन आचार्य स्वामी देवव्रतजी की अध्यक्षता में तथा पदाधिकारियों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

# प्रो.डॉ.भवानीलालजी भारतीय सम्मानित

आर्य जगत् के प्रसिद्ध लेखक एवं विद्वान प्रो.डॉ.भवानीलालजी भारतीय को हाल ही में लाला दीवानचंद्र ट्रस्ट द्वारा रखे गये **विशेष स्मृति पुरस्कार** से सम्मानित किया गया। दिल्ली के भारतीय लोकप्रशासन संस्थान के सभागार में न्यायमूर्ति ए.एस.आनंद की अध्यक्षता में तथा कर्नाटक के राज्यपाल श्री त्रिलोकनाथ चर्तुवेदी के प्रमुख आतिथ्य में यह सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। प्रसिद्ध कवि व राजस्थान के साहित्यकार डॉ. रामप्रसाद दाधीच को भी सम्मानित किया गया।

# स्वामी दिव्यानन्दजी का जन्मोत्सव मनाया गया

आर्य जगत् के जानेमाने संन्यासी तथा योगविद्या के प्रसारक पू. स्वामी दिव्यानन्दजी सरस्वती का ७५ वा जन्मदिवस विभिन्न कार्यक्रमों के साथ सोल्हास मनाया गया।

इस उपलक्ष्य में २४ मार्च से १३ अप्रैल २०१४ तक पातंजल योगधाम आश्रम, आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार) में चतुर्वेद पारायण यज्ञ एवं ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया था। इसके साथ ही वेदसम्मेलन, योग सम्मेलन, विरक्त सम्मेलन, योग संगोष्ठी, साधक व साधिका सम्मेलन आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न हुये, जिनमें आर्य जगत् के तपस्वी सन्यासी, विद्वान, लेखक, प्रवक्ता, नेता, वेदप्रचारक आदि बडी संख्या में सम्मिलित हुए थे। समारोह में पू. स्वामी दिव्यानन्दजी महाराज के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु तथा योगमय जीवन हेतु सभी ने शुभकामनाएं अभिव्यक्त की।

स्वामीजी ने योग शिविरों के माध्यम से देश-विदेशों में योगशिक्षा को पहुंचाकर स्वस्थ समाज के निर्माण में सहयोग दिया हैं।

thearyasamaj.org

# पुणे में सामूहिक उपनयन संस्कार

पिम्परी पुणे की आर्य समाज में कार्यरत यशस्वी पुरोहित व आर्य विद्वान श्री पं.विश्वनाथजी शास्त्री के ब्रह्मत्त्व में हाल ही में लगभग ४० बच्चों का सामूहिक उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार सम्पन्न हुआ । संतबाबा हरदासजी के जन्मदिवस पर आयोजित इस समारोह में श्री शास्त्रीजी ने बच्चों को सुसंस्कारित करने हेतु उपदेशामृत का पान कराते हुऐ कहा - 'बच्चे देश की अमूल्य संपत्ति हैं । इसलिये वे चरित्रवान् बनकर अपने व्यक्तित्व का सर्वांगिण विकास करें । मानवता के पथपर चलते हुए दुर्व्यसनों से बचे और जीवन का महान उद्देश्य निश्चित कर आगे बढते रहे ।' इस अवसर पर उन्होंने बच्चों के माता-पिता को भी आर्य समाज से जुडकर वेदधर्मी बनने का आवाहन किया ।

समारोह में सौ. मंगला तटेकर, सौ. भारती तेजवाणी, सौ. पद्मा कुंदनानी, सौ. पूजा माने, सौ. चंद्रा बजाज, सौ. मीरा वासवानी, श्री मनोहर तेजवाणी, श्री विकास माने, ब्र.दुष्यंत आदि उपस्थित थे ।

# रोजड में उपनिषद् व वेदान्त दर्शन का अध्ययन प्रारंभ

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड पो.सागपुर, जि. साबरकांठा (गुजरात) में गत १२ जुलाई २०१४ से विधिवत् ११ उपनिषदों व वेदान्तदर्शन का अध्ययन शुरू हो चुका हैं, जिसमें देश के कई स्थानों से आये आध्यात्मिक सुधीजनों ने भाग लिया हैं । दर्शन व व्याकरण के आचार्य स्वामी मुक्तानन्दजी शिविरार्थियों को अध्यापन करा रहे हैं । साथ ही अनेक मूर्धन्य वैदिक विद्वानों के सारगर्भित प्रवचन होगें । आश्रम के मार्गदर्शक योगनिष्ठ पू. स्वामी सत्यपतिजी का उपदेश प्राप्त हो रहा हैं

## * आर्य समाजों का धन्यवाद *

प्रान्तीय सभा के निर्देशानुसार दी गयी तिथियों पर राज्य की सभी आर्य समाजों ने अपने-अपने श्रावणी वेदप्रचार उत्सव २०१४ मनायें । कार्यक्रमों का प्रचार, सुव्यवस्थित नियोजन, धन (दान) संकलन, श्रोताओं से अनुरोध, बाहर सार्वजनिक स्थानों,स्कूल व कॉलेजों के कार्यक्रमों का नियोजन, यज्ञ की तैयारी, विद्वानों के निवास व भोजन की व्यवस्था, उनका सम्मान आदि सभी बातों के लिए आप सभी म.दयानंद के अनुयायियों व वैदिक धर्मियों को काफी मेहनत उठानी पड़ी। अपने व्यक्तिगत कार्यों की उपेक्षा कर मानवमात्र को वेदज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से आपने यह सब किया । एतदर्थ आप सभी के मन:पूर्वक धन्यवाद व आभार !

आभारोत्सुक-**महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा**

thearyasamaj.org

# प्रान्तीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सफल रहा

महाराष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा तत्त्वावधान में दि. २७ जून से ६ जुलाई के दौरान **तेरहवां प्रान्तीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर** हुआ, जिसमें लगभग २० प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लेकर गर्भाधान से लेकर अन्तेष्टि पर्यन्त के सोलह संस्कारो के साथ ही नित्य नैमित्यिक कर्मो, यज्ञीय विधियों का सम्यक् प्रकारेण प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम, परली में आयोजित इस दशादिनात्मक शिविर में सभा के उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री, डॉ. नयनकुमार आचार्य, प्रा. अरूण चव्हाण व पं.प्रशांतकुमारजी शास्त्री ने विविध संस्कारों का प्रशिक्षण दिया। पं. प्रतापसिंह चौहान ने भजन एवं गीत प्रस्तुत किये। सर्वश्री डॉ. ब्रह्ममुनिजी, वैद्य विज्ञानमुनिजी एवं श्री लक्ष्मणराव आर्य (गुरूजी) ने शारीरिक स्वास्थ्य, आध्यात्मिक जीवन व वैदिक सिद्धान्तों पर मार्गदर्शन किया।

समापन कार्यक्रम की अध्यक्षता सभा के संरक्षक श्री रामपालजी लोहिया ने की तथा प्रमुखातिथि के रूप में कोषाध्यक्ष श्री उग्रसेन राठौर उपस्थित रहे। वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरूजी ने अपने प्रास्ताविक भाषण में कहा– 'सम्प्रति समाज के नवनिर्माण हेतु वैदिक विचारों व सोलह संस्कारों की अत्यंत आवश्यकता है। हमारे पुरोहित यदि समर्पणभाव से इस दायित्व को निभायेंगे, तो निश्चय ही समाज व राष्ट्र प्रगतिशील होगा।' श्री राठौरजी ने आर्य पुरोहितों से अपील की कि वे सच्चे अर्थो में ईश्वर के प्रतिनिधि बनकर सुसंस्कारों व सुविचारों को सर्वत्र फैलायें। इससे संसार की सभी समस्याएं हल हो सकेंगी।

इस अवसर पर श्री दत्तात्रय मुले, व यादव भांगे इन दो प्रशिक्षणार्थियों ने शिविर कालीन अनुभव कथन किये। पं. सुधाकर शास्त्री ने भी मार्गदर्शन किया। शिविर में उत्तम प्रशिक्षण प्राप्त करनेवाले सर्वश्री दत्तात्रय मुले (प्रथम), यादव भांगे व मारूती घोरपडे (द्वितीय), बाबुराव काले (तृतीय) तथा अन्य सर्वश्री नागोराव हळदे, श्यामसुन्दर आर्य, विश्वनाथ कांबले पं. सोगाजी घुन्नर, प्रेमचन्द लव्हाण्डे, अमृतमुनिजी आदियों को मान्यवरों के शुभकमलों से पुरस्कार व प्रमाणपत्रों का वितरण किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री प्रभुलालजी गोहिल, जयपाल लाहोटी, रंगनाथ तिवार, विज्ञानमुनिजी, देविदासराव कावरे आदि उपस्थित थे।

शिविर की सफलता हेतु आचार्य प्रवीणजी, प्रा. नरेश शास्त्री, माधव शास्त्री, विवेक मुनिजी आदियों ने प्रयत्न किये।

thearyasamaj.org

।। ओ३म् ।।

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृताතेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

# मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश

## 'सत्यमेव जयते !'

**सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः ।**
**येनाक्रमन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र तत्सत्यस्य परमं निधानम् ।।**

(मुंडकोपनिषद् )

शेवटी सत्याचाच विजय होतो. (सत्यकर्माने माणूस मुक्ती मिळवितो) असत्याचा विजय कदापी होत नाही. सत्यानेच देवतांच्या सन्मार्गाचा (मुक्तीचा) दरवाजा उघडला आहे. (मानव मोक्ष मिळवू शकतो.) ज्या मार्गाने ऋषिवृंदांनी मुक्ती प्राप्त केली आहे, तो वेदांच्या ज्ञात्यांचाच मार्ग म्हणजे ती सत्याची शेवटची सर्वश्रेष्ठ सीमा होय.

दयानंदांची अमृतवाणी

## श्रीकृष्णांचे आदर्श जीवन

श्रीकृष्णाचा जो इतिहास महाभारतात दिलेला आहे तो अत्यंत उत्तम आहे. त्यांचे गुण, कर्म, स्वभाव व चारित्र्य ही महापुरूषाला शोभावीत अशी आहेत. त्यामध्ये श्रीकृष्णाने जन्मापासून मरणापर्यंत कसलेही अधर्माचरण केले नाही, अथवा कोणतेही दुष्कृत्य त्याच्या हातून घडले नाही, असे लिहिले आहे. परंतु या भागवतकाराने वाटेल ते अनुचित दोष कृष्णांच्या माथी मारले आहेत. दूध, दही, लोणी इत्यादींची चोरी, कुब्जादासीशी समागम, परस्त्रियांशी रासक्रीडा इत्यादी खोटेच दोष श्रीकृष्णावर लादले आहेत. ते सारे वाचून व इतरांना वाचून दाखवून, स्वतः ऐकून व इतरांना ऐकवून इतर पंथाच्या लोकांनी श्रीकृष्णाची बदनामी चालविली आहे. हे भागवत नसते तर श्रीकृष्णासारख्या महात्म्यांची खोटी निंदा मुळीच झाली नसती.

### ज्योतिर्लिंगाची कथा खोटी

शिवपुराणामध्ये बारा ज्योतिर्लिंगाची कथा आहे. ती कथा सर्वथैव अशक्य कोटीतील आहे. नाव ठेवले आहे- **ज्योतिर्लिंग**. परंतु त्यात प्रकाशाचा लवलेश नाही. रात्रीच्या अंधारात दिव्याचा उजेड नसेल, तर ते लिंग दिसत नाही त्या साऱ्या पुराणकारांच्या थापा आहेत.

(सत्यार्थ प्रकाश–अकरावा समुल्लास)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः **- माणसाची परीक्षा -**

**यथा चतुर्भिः कनकं परीक्ष्यते निघर्षणच्छेदनतापताडनैः ।**
**तथा चतुर्भिः पुरूषः परीक्ष्यते त्यागेन शीलेन गुणेन कर्मणा ॥**

अर्थः- ज्याप्रमाणे सोन्याची परीक्षा ही त्या धातूला घासून, कापून, तापवून व ठोकून या चार प्रकारांनी केली जाते, त्याचप्रमाणे माणसाची परीक्षा दानधर्माने (त्यागाने), सच्चारित्र्याने (शीलरक्षणाने) सद्गुणांनी व सत्कर्मांनी घेतली जाते.(चांगला मनुष्य या चार बाबींनी ओळखला जातो.)

# मधुमेह 'मूर्तिपूजे'चा

**- सौ. मालन अनंत रूद्रवार**

**'मधुमेह'** या आजाराच्या नावात जरी गोडी असली तरी त्याची प्रत्यक्ष करणी कशी आहे ? ते तुम्हां - आम्हां सर्वांना माहीतच आहे. **'मुख में राम बगल में छुरी !'** अशी या रोगाची अवस्था आहे. वर-वर पाहता सामान्य किंवा यःकश्चित् आजार वाटत असला तरी त्याचे दुष्परिणाम मात्र भयंकर आहेत. एखाद्या माणसाला हा आजार जर झाला तर त्यापासून किती तरी दुसरे आजार उद्भवतातच ! मधुमेह म्हटले की हार्ट अॅटक, दमा तसेच मूत्रपिंडाचे विकार, रक्तदाब हे जणू भावंडांप्रमाणे त्याच्या सोबत असतातच आणि हा आजार उद्भवण्याची कारणे जरी कोणतीही असली तरी पण या आजाराचे परिणाम ताबडतोब दिसून येत नाहीत. हळू हळू त्याचे परिणाम जाणवू लागतात. व ते आपल्या (माणसाच्या) अंतापर्यंत साथ देतात. आपल्या ध्यानीमनी नसतांना सुद्धा तो आपल्या शरीरात प्रवेश करून पक्के घर करून राहतो आणि तो दूर करणे किती दुरापास्त आहे. हे तर सांगणे नकोच !

तद्वतच मूर्तिपूजा हा सुद्धा मानव समाजाला लागलेला मधुमेह-दुर्धर असा आजार आहे. मूर्तिपूजा वरवर पाहता सुरेख, गोंडस वाटत असली तरी किंवा मूर्तिपूजेनंतर तुम्हाला ती मूर्ती, बेल फुलाच्या सजावटीने मोहक वाटत असली तरी **काय भुललासी वरलिया रंगा...**प्रमाणे स्थिती असते. चमकते ते सर्व सोने नसते.

**मूर्तिपूजेमुळे आपल्याला भोगावे लागणारे दुष्परिणाम आपण पाहातच आहोत.** हे वाक्य वाचून तुम्हाला आश्चर्य वाटेल परंतु अयोध्या राममंदिर- बाबरी मशीद वाद हा त्याचाच परिणाम आहे. हिंदूंकडे प्रत्यक्ष मूर्तीची पूजा घरोघरी किंवा मंदिरातून चालत असते. तर मुसलमानांकडे ती घरोघरी न होता थडग्यावर

thearyasamaj.org

चादर चढवणे, त्यांची फुलांनी पूजा करणे या प्रकारांद्वारे चालतेच ! हा सुद्धा मूर्तिपूजेचाच एक प्रकार आहे. अशा मूर्तिपूजा प्रकारांमुळे आज लाखो लोकांचे प्राण धोक्यात आले आहेत. ही पूजेची पद्धत कोणत्या काळी समाजात रूढ झाली, हें नक्की सांगता येत नाही. परंतु मधुमेहासारखी ती इतकी नकळत समाजाच्या नसानसात भिजली आहे की आता तिला समाजापासून वेगळी करणे म्हणजे कठीणच आहे, परंतू अशक्य नाही !

मधुमेह झालेला माणूस ज्याप्रमाणे त्याचे दुष्परिणाम माहीत असूनसुद्धा साखर खाण्याचा मोह सोडत नाही, त्याच प्रमाणे मूर्तिपूजेमुळे भोगावे लागलेले परिणाम दिसत असून सुद्धा मोठमोठे विचारवंत सुद्धा ती सोडायला तयार होत नाहीत.

मूर्तिपूजेमुळे होणारे आजार म्हणजे अंधश्रद्धा, निष्क्रियता, भूतप्रेत, नवससायास, श्राद्ध कर्म, मृतकसंस्कार, बलिप्रथा हे व यांसारखे अनेक प्रकार, ज्यामुळे सर्व समाज पोखरला जात आहे. सोवळे-ओवळे, स्पृश्य-अस्पृश्य आणि विपरीत पद्धतीने साजरे होणारे सणवार आदी-आदी !

मधुमेहाने जसे सर्व शरीर पोखरले जाते व संपूर्ण शरीराचा सापळा फक्त राहतो. तद्वतच मूर्तिपूजेने (जड पूजेने) व व्यक्ति पूजेने समाज पूर्णपणे पोखरला जातो. हे आपण नेहमीच अनुभवतो. राममंदिरसाठी झगडणाऱ्या लोकांना हे सुद्धा लक्षात येत नाही की, रामाने संपत्तीवर लाथ मारून वनवास पत्करला. पित्याच्या वचनाच्या पुर्ततेसाठी पूर्ण जीवन वेचले. देशासाठी स्वतःचे बलिदान केले. इथे तर तो आदर्श बाजूला राहुन रामभक्त तर पूर्ण देश स्वतःच्या स्वार्थासाठी बेचिराख करणारे महाभाग निर्माण झाले, ते केवळ एका मूर्तिपूजेसाठी !

मूर्तिपूजेमुळे मधुमेहाच्या आजाराप्रमाणे **सारासार विचाराचे** जे ग्लुकोज आहे, ते वेगळे करण्याची शक्तीच समाजातून नष्ट झाली आहे. श्राद्ध पद्धती ही मूर्तिपूजेतूनच निर्माण झालेली कल्पना आहे, जेणे करून माता-पिता जीवंत असतांना जी सेवा करून त्यांच्या जीवंत आत्म्यास शांती द्यावयाची, ती न देता मरणोत्तर त्यांच्या नावाने पिंडदान करून आळशी व ऐतखाऊ समाजाचे उदरभरण करायचे ! मधुमेह जसा पुष्कळसा आनुवंशिक असतो, त्या प्रमाणे मूर्तिपूजा सुद्धा अंधश्रद्धेने व परंपरेने चालत आलेली प्रथा आहे. या परंपरेला कायम मूठमाती दिल्याशिवाय खऱ्या अर्थाने केवळ भारताची नव्हे तर समग्र विश्वाची सर्वांगिण प्रगती साधणार आहे. एक सर्वव्यापक चेतन परमेश्वर हा दगड, लाकूड, धातू, इत्यांदीद्वारे कसा बरे घडविला जाऊ शकतो ? या संदर्भात राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज सडेतोड शब्दात सांगतात-

**देव बाजारचा भाजीपाला नाही हो !**

म्हणून मूर्तिपूजा दूर करण्यासाठी समाजांने जागृत होणे आवश्यक आहे.

**-मोंढा विभाग, माजलगांव**

thearyasamaj.org

# वेदप्रतिपादित सामाजिक मूल्ये

-प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

मनुष्य हा एक सामाजिक प्राणी आहे. मानवसमूहात राहून त्याला आपली प्रगती साधावी लागते. समाजाशी त्यांचे अत्यंत घनिष्ठ व **'जलाविन मीन'** असे नाते आहे. व्यक्ती, कुटुंब, समाज, राष्ट्र व समग्र विश्व असे संबंधाचे सूत्र विकसित होते ते सामाजिकतेमुळेच ! समाजाशिवाय व्यक्ती नाही व व्यक्तीशिवाय समाज नाही. माणूस घडला, तर समाज घडेल..व समाज घडला तर व्यक्ती घडेल...! असे अविभाज्य, अनिवार्य व अत्यधिक साहचर्याचे हे संबंध आहेत व्यष्टी व समष्टीचे ! अनादी काळापासून मानवमात्राच्या संपूर्ण कल्याणासाठी वेदज्ञानाची पावन ज्ञानसरिता वाहत आहे. यात सामाजिक मूल्यांच्या विकासाकरिता ज्या कोणत्या बाबी आवश्यक आहेत, त्यांचे प्रतिपादन अत्यंत मार्मिकपणे केले. वेदांचा हा समाजोत्कर्षाचा संदेश सार्वकालिक, सार्वभौमिक, सार्वदिशिक व सर्व प्राणिमात्रांच्या सर्वहिताचा व पूर्ण कल्याणाचा आहे. वेदांची अमृतवाणी केवळ वरकरणी नव्हे, तर पूर्णपणे सर्वसमावेशक व अंतर्बाह्य विकास साधणारी आहे. जागतिक मूलभूत समस्यांचे यथार्थ समाधान होते ते वेदांच्या तत्वज्ञानामुळेच!

सम् उपसर्गपूर्वक अज् या चलन व गति-अर्थक धातूपासून उत्पन्न झालेला **समाज** हा शब्द प्रामुख्याने चालणे, प्रगती साधणे, व्यवहार करणे आदी भावार्थांना व्यक्त करतो. जो मानवसमूह नेहमी गतिमान असतो, तो खरा प्रगतीशील व विकासोन्मुख मानला जातो. वेदांनी मानवसमाजाला जागृत राहण्याचा संदेश दिला, तो याचसाठी !

**यो जागार तमृचः कामयन्ते,** १
**यो जागारः तमु सामानि यन्ति ।**

म्हणजेच जो समाज जागृत आहे, त्यालाच ऋग्वेदीय ज्ञानतत्व प्रेरित करते. सर्वत्र त्याची स्तुती व प्रशंसा होते. यजुर्वेदात म्हटले आहे- **'भूत्यै जागरणं अभूत्यै स्वप्नम् ।'**२ आचार्य शंकरांनी तर **जागणारा हा सदसद्विवेकी असतो,**३ असे म्हंटले आहे. अथर्ववेदात स्वतःसोबतच आपल्या समाज बांधवांना जागविण्याचे आवाहन करून त्याद्वारे सर्वोन्नती साधण्याचा उपदेश मिळतो-

**उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवान् यज्ञेन बोधय आयुः प्राणं प्रजां पशुन् द्रविणं यजमानं च वर्धय ।** ४

आचार्य भर्तृहरी हे समाजातील सर्व घटकांना उद्योगशील बनण्याचा सल्ला देतांना म्हणतात-

**आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः। नास्त्युद्यमसमो बन्धु कृत्वा यः नावसीदति ।।** ५

thearyasamaj.org

समाजाची जडणघडण होते ती आदर्श मानवांमुळे ! म्हणूनच वैदिक वाङ्मयात सर्वप्रथम मानव बनण्याचे संकेत मिळतात-**मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्** ।६

चांगला मानव हा चांगलेच कार्य करेल. म्हणूनच तो अगोदर मननशील व दूरदृष्टीचा घटक बनावा आणि नंतर त्याने दिव्य संततीला जन्माला घालावे. आदर्श मानव होण्यासाठी त्याला अगोदर जीवन रूपी वस्त्राचे आडवे उभे तंतू (धागे) विणावे लागतील. प्रकाशयुक्त अशा ज्ञानरूप तेजोमय सूर्याचे अनुकरण करावे लागेल. विद्या व बुद्धीयुक्त होऊन त्या सत्प्रकाश स्वरूप मार्गाचे संरक्षण करावे लागेल आणि अशी कामे की ज्यात कोणतेही भ्रम किंवा द्वंद्व नाहीत, त्यांचा विस्तार करावा लागेल. तरच तो खरा माणूस घडू शकतो. वेदांनी आपल्या वृत्तीला पवित्र ठेवण्याविषयी निर्देश केला आहे -

**माहिर्भूर्मा पृदाकुः।** ७

अर्थात तू सर्पाप्रमाणे कुटिलवृत्ती बाळगणारा भयंकर विषारी प्राणी बनू नकोस व लांडग्याप्रमाणे क्रोधी व स्वार्थी होऊ नकोस. एके ठिकाणी आपल्या प्रवृत्तींचे निर्दालन करण्याचा उपदेश देतांना म्हटले आहे -

**उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।**
**सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं दृषदेव प्र मृण रक्ष इंद्र ।।** ८

म्हणजेच हे ऐश्वर्यशाली मानवा ! तू घुबडाची अंध मोहवृत्ती, लांडग्याची क्रोध व स्वार्थ वृत्ती, कुत्र्याची स्वाभाविक स्व जाति द्रोहवृत्ती आणि लांगुलचालन प्रवृत्ती, चिमण्याची कामवृत्ती, गरूडाची अहंकार वृत्ती आणि गिधाडाची लोभवृत्ती यांना सोडून दे आणि या वाईट वृत्तींना दगडांनी ठेचून काढ !

आपला मुलगा एक चांगला माणूस घडावा, म्हणूनच त्याचे माता-पिता त्याला गुरूकुलात घेऊन जातात व आचार्यांना म्हणतात- 'आचार्य महोदय ! पुष्पहार हाती घेतलेल्या माझ्या मुलास आपण गुरूकुलात प्रवेश द्यावा व त्याला पूर्ण विद्वान पुरूष बनवावे.'९ आदर्श समाजनिर्मितीच्या प्रक्रियेत श्रेष्ठ गुणवैशिष्ट्यांनी अलंकृत मानवाची गरज अत्यंत सार्थक ठरते. यासाठी प्रत्येक मानवाने आत्मोन्नतीला प्राधान्य द्यावयास हवे. आपल्या आत्म्याचा आपणच उद्धार करावा. स्वतःला हीन समजू नये.'

**उद्धरेदात्मना आत्मानं**
**नात्मानमवसादयेत् ।** १०

**मी इन्द्र आहे...मी बलवान आहे. ऐश्वर्य संपन्न आहे. मी कधीही पराजित होणार नाही.११** अशी उच्च भावना ह्दयी ठेवावी अथर्ववेदात आलेल्या दोन मंत्रातून आत्मकल्याणाचा व प्रगतीचा मोठा संदेश दिसून येतो.

**उत्क्रामातः पुरूष मावपत्था**
**मृत्योः षड्वीशमवमुंचमानः ।** १२

thearyasamaj.org
उद्यानं ते पुरुष नावयानं
जीवांतु ते दक्षतातिं कृणोमि ।। १३

याचा थोडक्यात भावार्थ असा- हे मानवा ! तू उच्च प्रतिष्ठित हो, प्रगती कर ! तू खाली घसरू नकोस. मृत्यूच्या बेड्यांना तोडत पुढे पुढेच चल ! तुझे उत्थान होत राहो. तुझे अधःपतन होता कामा नये. मी तुला दक्ष बनवितो. याबरोबरच एका मंत्रात म्हटले आहे - हे मानवा ! तू आपल्या स्वशक्तीला ओळख. तू शत्रूंचा संहारक आहेस, तू वर्चस्वी व जनतेच्या शरीरांचा रक्ष आहेस. म्हणूनच तू आपल्या प्रतिस्पर्ध्यांपेक्षा ही त्यांना ओलांडून पुढे व पुढेच जा ! १४

अशा विचारांनी मानव आत्मबलिष्ठ, आत्मविश्वासी आणि आत्मविकासी झाल्यानंतर मानव निश्चितच सामाजिक विकासाच्या कार्यात अग्रणी ठरू शकतो. वैदिक समाजव्यवस्था ही समानतेवर आधारित आहे. कोणीही लहान किंवा मोठा नाही. **अज्येष्ठासो अकनिष्ठासो एते संवावृधुः सौभगाय।** वेदांनी प्रतिपादित केलेला साम्यवाद सर्वसमावेशक असा आहे. अथर्ववेद म्हणतो-

**ज्यायस्वन्तः चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः...।...संमनस्कृणोमि** ।। १५

अर्थात् हे मानवांनो ! तुम्ही सर्वजण एक-दुसऱ्यांपेक्षा मोठे व श्रेष्ठगुणसंपन्न समान विचारांचे किंवा एकसमान मनाचे होऊन कार्यभार स्वीकारत एकाच ठिकाणी केंद्रीभूत होत जीवन जगत राहा. एक दुसऱ्यांपासून वेगळे कदापी राहू नका.समानतेचा मूलमंत्र देतांना अथर्ववेदात ऋषी म्हणतात-

**समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि । १६**
**सम्यंचोऽग्निं सपर्यतारा नाभिमिवाभितः**

अर्थात् हे विश्वातील लोकांनो तुम्हां सर्वांच्या पिण्याच्या पाण्याचे स्थान (पाणपोई) एकच असावे. जेवणाचे ठिकाण (भोजनगृह) एकच असावे. एकत्र येऊनच आपण सर्वांनी भोजनाचा आस्वाद घ्यावा. मी (ईश्वर) तुम्हां सर्वांना एकाच स्नेहबंधनात बांधतो. ज्याप्रमाणे रथाच्या चाकाचे सर्व आरे सर्व बाजूंनी येऊन एकत्र मिळतात. त्याचप्रमाणे तुम्ही सर्वानी एकाच जागी (प्रार्थना स्थळी) येऊन प्रभु परमेश्वराची उपासना व भक्ती करावी. खरोखर वरील आशय किती उदात्त आहे. या वैदिक साम्यवादाचा आश्रय घेतल्याने खऱ्या अर्थाने आजच्या सर्व सामयिक प्रश्न सुटणार आहेत. धनसंपत्ती व वस्तूंच्या समानतेपेक्षा अंतर्मनाची समानता फारच मोलाची आहे. इथे तर सामाजिक व्यवहाराबरोबरच परमेश्वराच्या भक्तीबाबतही समानता व्यक्त केली आहे. आज सर्वत्र आदर व सन्मानाविषयी भेदभाव आढळतो. अभिवादनाविषयी देखील संकुचितता दिसून येते. यजुर्वेदात **सर्वेभ्यो समानरूपेण नमः**

thearyasamaj.org

। असा सूर आळवल्याचे निदर्शनास येते.

**नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वजाय चापरजाय च नमः । मध्यमाय चाप्रगल्भाय च नमो जघन्याय च बध्नन्याय च ।। १७**

वेदमाऊलीची ही समानेची शिकवण साऱ्या जगाला उच्च- नीचतेच्या, जाती-धर्माच्या, गरीबी- श्रीमंतीच्या भिंती तोडून मानवतेच्या एका पवित्र मंदिरात एकत्र आणणारी आहे. यामुळे देश-देशांतरात कधीही संकीर्णतेची निर्माण होणार नाही. सर्व लोक आनंदाने सन्मार्गगामी बनून शाश्वत सुखाचे अधिकारी बनतील.

त्याच बरोबर भोजनाविषयी सुद्धा म्हटंले आहे. अन्न वाटून खाण्यात जो आनंद मिळतो, तो एकटे खाण्याने नव्हे ! याचाच अर्थ अन्नदानाची सत्प्रवृत्ती जागृत करण्याचा संकेत वेदांद्वारे मिळतो.

**मोघमन्नं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य । नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाघो भवति केवलादी ।। १८**

मनुस्मृती ग्रंथातही अतिथींच्या जेवणानंतरच यजमानांनी भोजन करावे, असा उपदेश आहे. **विघसो भुक्तशेषं यज्ञशेषं तथाऽमृतम् । १९** वैदिक समाजव्यवस्थेत बलिवैश्वदेव यज्ञाची भावना ही मानवाला श्रेय मार्गाकडे घेऊन जाणारी आहे. ही संकल्पना प्राचीन काळात सर्वत्र मूर्त स्वरूपात होती.

सध्याच्या बिगडत चाललेल्या समाजव्यवस्थेला सुधारणेसाठी वेदांतील ही सर्वसमावेशक अशी सामाजिक मूल्ये खरोखरच रामबाण उपाय आहेत.

---

**संदर्भ–**


१) ऋ ५/४४/१४
२) यजु. ३०/१७
३) जागर्ति को वा सदसद्विवेकी । (प्रश्नोत्तरी -४)
४) अथर्व १९/६३/१
५) नीतिशतकम्
६) ऋ. १०/५३/६
७) यजु. ६/१२
८) अथर्व ८/४/२२
९) आधत्त पितरो गर्भ कुमारं पुष्करस्त्रजम्। यथेह पुरूषोऽसत् । यजु २/३३
१०) श्रीमद्भगवद्गीता
११) अहनिन्द्रो न पराजिग्य ऋ १०/४८/५
१२) अथर्व. ८/१/४
१३) अथर्व. ८/१/६
१४) सूरिरसि वर्चोधा असि तनूपाऽसि। आप्नुहि श्रेयासमति समं क्राम ।। (अथर्व २/११/४)
१५) अथर्ववेद -३/३०/५
१६) अथर्ववेद- ३/३०/६
१७) यजुर्वेद -१६/३२
१८) ऋग्वेद. १०/११७/६
१९) मनुस्मृती. ३/२८/५


******

thearyasamaj.org



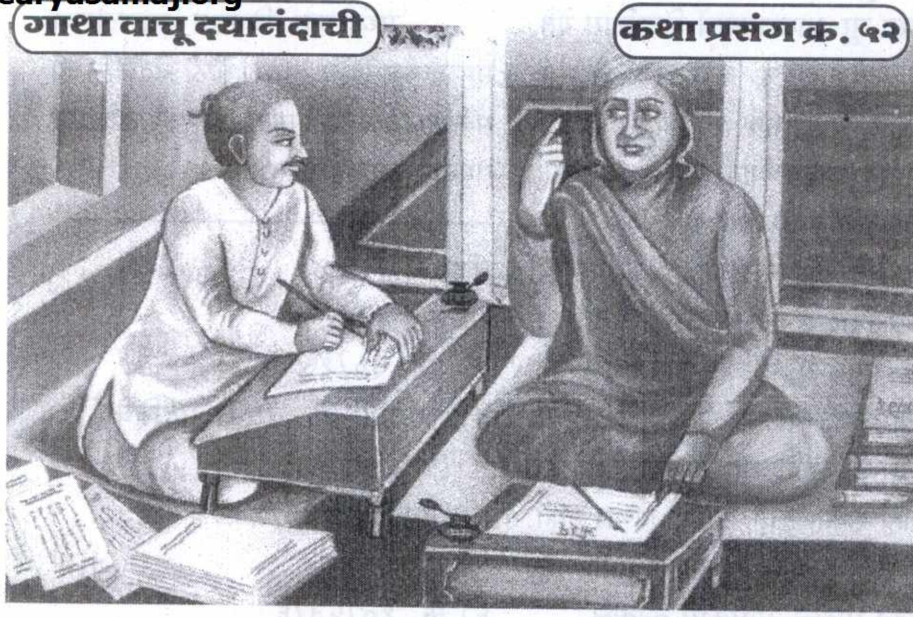

# सत्यार्थप्रकाश ग्रंथ लेखन

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

सन् १८७४-७५ या वर्षात महर्षी दयानंदानी मुरादाबादचे राजे जयकृष्णदास (चतुर्वेदी ब्राह्मण) यांचा सल्ला स्वीकारून आपल्या सिद्धांतांना व विचारांना प्रकाशित करणारा **'सत्यार्थ प्रकाश'** नावाचा ग्रंथ लिहिला । हा ग्रंथ या राजांनी छापला देखील ! हा ग्रंथ स्वामीजींनी तोंडी सांगून पंडितांकरवी लिहून घेतला होता. त्यामुळे मुद्रण दोष (प्रुफ) पाहण्यास ही त्यांना वेळ मिळाला नाही. परिणामतः सत्यार्थ प्रकाश च्या या प्रथम संस्करणात जिथे सैद्धांतिक चुका राहिल्या, तिथे भाषा शुद्धीकरणाचा तर प्रश्नच नव्हता. कालांतराने स्वीमीजींना जेंव्हा या ग्रंथातील या त्रुटी दाखविण्यात आल्या, तेंव्हा त्यांनी या ग्रंथाचे संशोधित व संवर्धित संस्करण काढण्याचा संकल्प केला. सर्वाधिक व्यस्ततेमुळे सत्यार्थप्रकाश च्या संशोधित पांडुलिपीला अंतिम रूप देण्यास व ते छापण्यास पाठविण्याकरिता वेळ जरी लागला, तरी एका चांगल्या कामाची इतिश्री झाली. पहिल्या संस्करणात ईसाई व इस्लाम मतांच्या समीक्षणाचे दोन समुल्लास छापावयाचे मागे राहिले होते. त्यांना ही या नव्या संस्करणात समाविष्ट करून ग्रंथाला पूर्णत्व प्रदान केले. जेव्हा या ग्रंथाची भूमिका लिहावयाची होती, तेंव्हा स्वामीजी उदयपुरात होते. येथील स्वामीजींचे निवासस्थान म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या नवलखा

thearyasamaj.org

राजवाड्यात त्यांनी हे भूमिकालेखनाचे कार्य पूर्ण केले आणि शेवटी यावर आपली सही केली. कागदाच्या एका बाजूला लिहिलेला मजकूर **महाराणांचे उदयपुर** असा होता. असे लिहिण्यामागे स्वामीजींची एक रहस्यमय भावना होती. स्वामीजी आपल्या ग्रंथवाचकांना असा संकेत करू इच्छित होते की जो ग्रंथ ते वाचत आहेत, तो महत्वाचा तर आहेच ! पण त्याचबरोबरच यांची सांगता एका अशा शहरात झाली आहे, जे की एकेकाळी आर्यांचे गौरव केंद्र होते. **हिंदुवा सूरज** (हिंदू समाजाचे सूर्य) म्हणून ओळख असलेल्या महाराणा प्रतापांच्या वंशजांच्या राजधानीत तो ग्रंथ लिहून पूर्ण केला.म्हणूनच तो महत्वाचा ठरणारा होता.

*****

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५.शंकरकॉलनी,

श्रीगंगानगर(राज.)

---

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने पू. पिताश्री स्व.विठ्ठलराव बिराजदार स्मृती

## राज्यस्तरीय विद्यालयीन वक्तृत्त्व स्पर्धा २०१४

**विषय :- 'महर्षी दयानंदाचे मानवतेचे विचार'**

**रविवार, दिनांक ३० नोव्हेंबर २०१४, वेळ :- सकाळी ११.०० वाजता**

**स्थळः (आणखी निश्चित व्हावयाचे आहे ?)**

### * स्पर्धेचे नियम व अटी *

१) या स्पर्धेत केवळ माध्य.विद्यालयाच्या (इयत्ता ८,९,१० वी वर्गाच्या) विद्यार्थ्यांना भाग घेता येईल.

२) या स्पर्धेसाठी प्रत्येक विद्यालय किंवा आर्य समाज जास्तीत जास्त ३ स्पर्धक पाठवू शकतील.

३) प्रत्येक स्पर्धकास मराठी/हिंदी भाषेतून बोलण्यासाठी फक्त ८ (६+२) मिनीटे वेळ दिला जाईल.

४) स्पर्धा संघाचा प्रवेश अर्ज व प्रवेश शुल्क रु. ५०/-दि. २७ नोव्हबंर २०१४ पर्यंत स्पर्धेचा संयोजक स्थळाच्या पत्त्यावर पाठवावे.

५) स्पर्धक विद्यालयातर्फे येणार असतील तर त्यांनी मुख्याध्यापकांचे पत्र व ओळखपत्र आणावे अथवा ते आर्य समाजामार्फत येणार असतील तर त्यांनी तेथील पदाधिकाऱ्यांचे पत्र सोबत आणावे.

६) स्पर्धकांनी येण्या-जाण्याचा खर्च स्वतः करावा. भोजन व निवासाची व्यवस्था स्पर्धेच्या ठिकाणी करण्यात आली आहे.

७) यापूर्वीच्या स्पर्धेतील पारितोषिक प्राप्त विजयी स्पर्धकांनाही या स्पर्धेत भाग घेता येईल.

८) पारितोषिके अ) प्रथम - रु. १५००/-, ब) द्वितीय रु. ११००/-, क) तृतीय रु. ७५१/- (तिघांना रु. १०० चे वैदक साहित्य) ड) सर्व स्पर्धकांना प्रमाणपत्रे वं वैदिक साहित्य भेट.

– निवेदक –

**संयोजक आर्य समाज व महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा**

thearyasamaj.org

प्रेरणा विशेष

# असा ही एक आदर्श विवाह

-प्रा.अर्जुनराव सोमवंशी

चळवळ किंवा संस्थेला बळकटी येते ती तिच्या तत्वांना प्रत्यक्ष आचरणात आणणाऱ्या क्रांतिकारी कृतिशील कार्यकर्त्यांमुळे ! विचारांना कृतीची जोड देणारे असे कार्यकर्ते मात्र समाजात फारच तुरळक सापडतील ! त्यांनी आपल्या मुला-मुलींचा आंतरजातीय (प्रेमविवाह नव्हे, अँरेञ्ज्ड विवाह ) आदर्श विवाह घडवून आणला. घरचे नातेवाईक, पाहुणे व जातीतील लोक काय म्हणतील? याचा विचार न करता जे आपल्या तर्क बुद्धीला पटले आणि जे

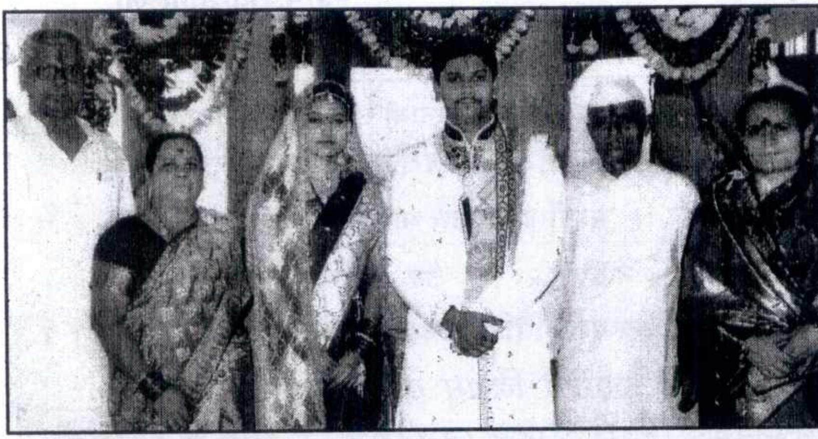

एरव्ही मत-पंथ व जातिभेदाच्या विरोधात बोलणारी मंडळी जेंव्हा आपल्याच मुला-मुलींच्या विवाहाची वेळ येते, तेंव्हा मात्र चार पावले मागे टाकतांना दिसतात. बाहेरचे सोडा पण ज्या आर्य समाजाने मनुष्यकृत संप्रदाय व जातीयतेला वेदांच्या आधारे मूठमाती दिली, तिथे देखील आपल्या जातीचा अभिमान बाळकणारे लोक मोठ्या प्रमाणात आढळतात. कांही साहसी आर्यजन मात्र अशांना अपवाद ठरले आहेत. गेल्याच महिन्यात एकाच गावचे दोन विद्वान मित्र एकत्र आले व वेदप्रामाण्य व ईश्वरीय सृष्टी व्यवस्थेला अनुसरुन योग्य आहे, तेच त्यांनी केले. मनुष्यकृत जातिव्यवस्थेच्या भिंती तोडणारे ते दोन मित्र म्हणजे सोलापूरचे पं.राजवीरजी शास्त्री व उदगीरचे पं.प्रतापसिंहजी चौहान होत.पं.राजवीरजींचा होतकरु मुलगा चि.वेदसुमन व प.प्रतापसिंहांची गुणी व सोज्ज्वळ मुलगी कु.गायत्री या दोघांचा 'आदर्श विवाह' जूनच्या ३० तारखेला उदगीरला मोठ्या उत्साहात संपन्न झाला. दोघांही मित्रांनी आपल्या मुला-मुलींचा विवाह करतांना जाती-पातीचे कोणतेही

thearyasamaj.org

धरणी, मान-पान वगैरे कांहीच अपेक्षिले नाही. तसे पाहिले तर इतरांच्या लग्न सोहळ्यात फार मोठा डाम डौल दिसतो. खर्चाला तर अंतच नसतो. एक प्रकारे धनशक्तीचे प्रदर्शनच म्हणा की ! हा विवाह मात्र अगदी साध्या पद्धतीने पार पडला! विशेष म्हणजे उदगीर व सोलापूर चे आर्य कार्यकर्ते आणि इतर स्नेही आर्यजन हे आपल्याच घरचे शुभकार्य समजून विवाहाच्या तयारीत मग्न होते. आर्य कार्यकर्ते हेच त्यांचे खरे पाहुणे !

पं.राजवीरजींच्या घरचा हा तिसरा विवाह ! यापूर्वी दोन्ही मुलींचे विवाह आंतरजातीयच झाले. त्यामुळे राजवीरजी व त्यांच्या धर्मपत्नी सौ.ललिताबाई यांना हा विवाह अगदी सहजपणे करता आला. या दाम्पत्यांचे किती मोठे औदार्य पहा की त्यांनी आपला मुलगा जो की उच्चविद्याविभूषित कॉम्प्युटर पदव्युत्तर (एम.सी.ए.) आहे. तो स्वतःचा कार्यव्यवसाय सांभाळतो, असे असतांनाही शास्त्री दाम्पत्याने सून मात्र साध्या घरची निवडली. त्यांना चांगली धनसंपन्न घरे मिळाली असती, पण मुलीची गुणवत्ता आणि आर्य संस्कार पाहुन व प्रतापसिंहांसारख्या मित्राची कन्या पाहुन आनंदाने स्वीकृती दिली.

इकडे प्रतापसिंहजी व सौ.सुमनदेवी यांी मात्र हा पहिलाच विवाह ! त्यांनी या कामी फार मोठे धाडस दाखविले. नातेवाईक व भाऊ-बहिणींनी यासाठी परवानगी नाकारली. कांही पाहुण्यांनी तर लग्नाला येण्यासही नकार दिला. त्यामुळे भविष्यात काय होईल, कसे होईल? असे एक नव्हे, तर अनेक प्रश्न निर्माण होऊ लागले. या दाम्पत्याने मात्र या गोष्टींची पर्वा न करता जे सत्य वैदिक सिध्दांतांना अनुसरुन जे वेदांचे पुरस्कर्ते व अनुयायी आहेत, तेच आपले सगे-सोयरे, संबंधी असा उदात्त दृष्टिकोन ठेऊन हा धाडसी निर्णय घेतला आणि पाहता-पाहता थोर क्रांतिकारी आर्यनेत्यांची परम्परा लाभलेल्या आर्य समाज, उदगीर येथे हा विवाह सोहळा आनंदाने पार पडला. विशेष म्हणजे या विवाह जोडणीच्या कार्यात धडाडीचे आर्य कार्यकर्ते व आमचे आत्मीय डॉ.ब्रह्ममुनिजींनी पुढाकार घेऊन दोन्हीं कुटुंबांना प्रेरित केले.

श्री राजवीरजी (रायाजी) व श्री प्रतापसिंहजी हे दोघेही क्रांतिकारकांची परंपरा लाभलेल्या 'गुंजोटी' ता.उमरगा या गावचे मूळ रहिवाशी ! या दोन्ही मित्रांना लहानपणापासूनच आर्य समाजाचे संस्कार लाभले. प्रतापसिंहाचे वडील श्री माणिकसिंह हे हैदराबाद संग्रामातील स्वातंत्र्य सैनिक व शिक्षक म्हणून कार्य केलेले प्रतिष्ठित व्यक्तिमत्व, तर राजवीरजींचे वडील शिवाजीराव भोसले हे गावातील उत्तम शेती व्यवसाय

thearyasamaj.org

साभाळणारे नामवंत शेतकरी. पं.वेदप्रकाशजींचे बलिदान याच गावात झाले होते. असे हे मित्र स्थानिक श्रीकृष्ण विद्यालयात .एकत्र शिकले. पुढे राजवीरजींना दयानंद बाह्य महाविद्यालय हिसार येथे जाण्यास व प्रचारक बनण्यास प्रतापसिंहांनीच प्रेरणा दिली. शिक्षणानंतर कांही काळ या दोघांनी वेद प्रचारही केला. पुढे राजवीरजी हे गुलबर्गा व नंतर सोलापुरातील आर्य समाजाचे यशस्वी विद्वान पुरोहित बनले, तर प्रतापसिंहजी हे उदगीरच्या श्यामलाल स्मारक अभियांत्रिकी महाविद्यालयाचे कर्मचारी! कांही वर्षापूर्वी हे कॉलेज बंद पडल्याने व संस्थांतर्गत विवादामुळे त्यांनी नोकरी सोडून दिली. गेल्या १० वर्षांपासून ते प्रांतीय आर्य सभेचे भजनोपदेशक म्हणून कार्यरत आहेत. राजवीरजीचे कुटुंब सोलापूरच्या आर्य समाजात तर प्रतापसिंहजींचे कुटुंब उदगीरच्या आर्य समाजात ! दोघांनाही स्वत:चे घर नाही, दयानंदांचे वेदमंदिर हे त्यांचे घर! दोन्ही आर्य समाज आर्य क्रांतिकारकांचे केंद्र ठरलेले ! आर्य हुतात्मे भाई श्यामलालजी हे उदगीरमध्ये जन्मले. ही त्यांची कर्मभूमी तर सोलापूर ही अंत्यसंस्कारभूमी ! अशा ऐतिहासिक पार्श्वभूमीचा सुवर्णयोग या दोन कुटुंबांना लाभलेला. वर-वधूचा जोडा देखील गुण, कर्म, स्वभाव व आचार-विचारांनुसार एक सारखा शोभणारा ! अनेक आर्य विद्वान व कार्यकर्त्यांच्या उपस्थितीत अग्निदेवतेला साक्षी मानून डॉ.नयनकुमार आचार्य व पं.सुधाकर शास्त्री यांनी हा विवाहविधीपूर्ण वैदिक पद्धतीने पूर्ण केला. याप्रसंगी तपोनिष्ठ संन्यासी व प्रांतीय सभेचे प्रधान स्वामी श्रद्धानंदजी, मंत्री राजेन्द्र दिवे, मार्गदर्शक डॅा.ब्रह्ममुनिजी, आर्यवीरदलाचे मुख्य प्रशिक्षक श्री हरिसिंहजी आर्य, पं.प्रियदत्तजी शास्त्री, बालाप्रसाद सोनी आदींनी नवदाम्पत्यांच्या यशस्वी गृहस्थ जीवनाची कामना करीत आशीर्वाद दिले. तर श्री सोनी यांच्या संकल्पनेतून उपस्थितांनी विविध रंगांच्या सुगंधीत कुसुमांचा नूतन वधूवरांवर वर्षाव करीत शुभाशीर्वाद दिले. असा हा क्रांतिकारी आदर्श विवाह सोहळा सामाजिक परिवर्तनाची नांदी ठरणारा आहे. वेदानुमोदित आदर्श मानव समाजस्थापनेच्या दृष्टीकोनातून असे विवाह झाले पाहिजेत. यामुळे महर्षी दयानंद सरस्वतीचे गुण-कर्म-स्वभावांवर आधारित नवमानव समाजाच्या उभारणीचे स्वप्न साकार होणार आहे. नूतन वधु-वरांसह दोन्ही कुटुंबियांचे हार्दिक अभिनंदन व शुभेच्छा !

-आनंद नगर, उदयनगर शेजारी,
नांदेड नाका, उदगीर
मो.९४२२६१०३१३

thearyasamaj.org

## वार्ता विशेष 'दयानंद हेच खरे महिलोद्धारक'-आचार्य हरिसिंह

'वेदाभ्यासाचा पूर्ण अधिकार महिलांना देऊन स्त्री हिच खऱ्या अर्थाने राष्ट्रनिर्मात्री आहे, अशी प्रमाणपूर्वक ग्याही देऊन तिला मानाचे सर्वोच्च स्थान देणारे स्वामी दयानंद हेच खरे नारी उद्धारक ठरतात', असे उद्गार सार्वदेशिक आर्यवीर दलाचे प्रधान प्रशिक्षक आचार्य श्री हरिसिंहजी आर्य यांनी उदगीर येथे काढले.

प्रांतीय आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने येथील अक्षरनंदन विद्यालयात आयोजित सात दिवसीय आर्यकन्या वैदिक संस्कार शिबिराचा समारोप दि. १ जून २०१४ रोजी झाला. त्यावेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून श्री आर्य बोलत होते. अध्यक्षस्थानी शाळेचे सचिव व सामाजिक कार्यकर्ते श्री माधव हलगरे हे होते कार्यक्रमास सभेचे मार्गदर्शक डॉ.ब्रह्ममुनिजी, विज्ञानमुनिजी, वैदिक विद्वान पं. प्रियदत्तजी शास्त्री, सभेचे उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री, धर्ममुनिजी, भजनोपदेशक सुभाष गायकवाड, श्रीमती सावंतबाई, वैजनाथराव हालिंगे, बिरजदार, अजितकुमार, सरसंबे, डॉ.बी.एन. मदनसुरे आदी उपस्थित होते. यावेळी कांही विद्यार्थिनींनी शिबिर काळातील अनुभव कथन केले. डॉ. ब्रह्ममुनिजी म्हणाले-'आज मुलींना सुसंस्कारित होऊन चारित्र्यसंपन्न होण्याची गरज आहे. वाढत्या पाश्चात्य कुसंस्कारांपासून स्वतःस वाचवावे.' अध्यक्षीय समारोपात श्री हलगुरे गुरूजींनी कन्या संस्कार शिबिरांच्या आयोजनासाठी प्रतिवर्षी शाळा उपलब्ध करून देण्याचे आश्वासन दिले. कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक प्रा.अ.ना.सोमवंशी व सूत्रसंचलन प्रा.डॉ.नरेद्र शास्त्री यांनी केले तर काव्यमय आभार श्री इंदुमती सावंत यांनी मानले. सौ. संध्या बेद्रे, सौ. मीराबाई बिरादार, सौ. सीताबाई निरमनाळे यांच्यासह इतर महिला व आर्य कार्यकर्त्यांनी पूर्णवेळ कार्य करून हे शिबिर यशस्वी केले.

## डॉ. नंदिता शास्त्री यांचा जालन्यात सत्कार

भारतसमृद्धी महायज्ञानिमित्त संभाजीनगरात आलेल्या पाणिनी आर्ष कन्या गुरूकुलाच्या आचार्या डॉ. नंदिता शास्त्री यांनी नुकतीच जालना येथील आर्य समाज व त्याद्वारे चालविल्या जाणाऱ्या आर्य हिंदी विद्यालयास भेट दिली. याप्रसंगी ज्येष्ठ शिक्षिका श्रीमती आयेशा खान व आर्य कार्यकर्त्यांतर्फे त्यांचा भावपूर्ण सत्कार करण्यात आला.

यावेळी श्रीमती शास्त्री म्हणाल्या-

thearyasamaj.org

समाज व कुटुंबाची खऱ्या अर्थाने प्रगती साधावयाची असेल तर मुला-मुलींनी सुसंस्कारित करावे. त्यांना वेदप्रतिपादित तत्वज्ञान शिकवावे.' वेदाभ्यासी ब्रह्मचारिणींनी यावेळी मंत्रपाठ केला.

**कर्मचारी श्री राठोड सेवानिवृत्त**

याच शाळेत गेल्या २५ वर्षापासून सेवारत चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी श्री रविशंकर राठोड हे वयोमानाप्रमाणे निवृत्त झाले. संस्थेतर्फे एका छोट्याशा समारंभात त्यांचा सपत्नीक सत्कार करून त्यांना निरोप देण्यात आला.

वरील दोन्हीं कार्यक्रमांना प्रसिद्ध विधिज्ञ व राज्याच्या आर्य सभांतर्गत आंतरजातीय विवाह विभागाचे प्रमुख ॲड. जोगेंद्रसिंह चौहान, आर्य समाज संभाजी नगरचे मंत्री दयाराम बसैये, शाळेचे अध्यक्ष बद्रीप्रसाद सोनी, सचिव पारसनंद यादव, पुरोहित संतोष आर्य, ओमप्रकाश बसैये, मु.अ. श्रीराम, सुनील रूपा, बलराम नंद, दीपक राठोड, बनकर, संतोष हिरास, अडियाल, उबाळे मोरे, श्रीमती ठाकूर, आदी उपस्थित होते.

# उदगीरमध्ये संस्कृत भाषण स्पर्धेला प्रतिसाद

आर्य समाज उदगीर व सौ. मधुमती शिंदे द्वारा संचालित संस्कृत प्रचार केंद्राच्या संयुक्त विद्यमाने उदगीर येथे नुकत्याच घेण्यात आलेल्या तालुकास्तरीय संस्कृत भाषण स्पर्धेस विद्यार्थ्यांकडून भरभरून प्रतिसाद मिळाला. श्रावणी पौर्णिमेला आर्य कार्यकर्त्ते डॉ.बी.एन. मदनसुरे यांच्या मातुःश्री स्व.इन्दिराबाई नरसिंहराव मदनसुरे यांच्या स्मरणार्थ आयोजित या स्पर्धेत जवळपास २२ विद्यार्थ्यांनी भाग घेतला. संस्कृत भाषेच्या गौरवार्थ पार पडलेल्या **संस्कृत दिन** समारंभात अध्यक्षस्थांनी शिवाजी इंद्राळे हे होते. प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, डॉ. मदनसुरे, प्रा.सतनप्पा हुरदळे, अजितकुमार सरसंबे, प्रा. प्रमोद कावरे हे या वेळी प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थित होते. समाजाची नवनिर्मिती व राष्ट्राची जडणघडण व्हावी, यासाठी संस्कृत भाषेच्या विशुद्ध तत्वज्ञानाची गरज असल्याचे यावेळी श्री हंद्राळे म्हणाले. इतर मान्यवरांनीही यावेळी संस्कृत भाषेचा गौरव केला.

या स्पर्धेतील पारितोषिक प्राप्त शालेय गटातून कु. वैष्णवी गुरूडे (प्रथम) कु. उत्कर्षा हुरदळे व चि. असलम सौदागर (द्वितीय), कु. ऋतुजा खंकरे व कु. दिव्या कावरे (तृतीय) या विद्यार्थिनींनी तर महाविद्यालयीन गटातून कु. प्रीती मालानी या एकमेव विद्यार्थिनींला पुरस्कार प्रदान करण्यात आले. सर्वश्री प्रा. सोमदेव शिंदे श्री प्रकाश आर्य यांनी परीक्षण केले.

thearyasamaj.org

# चि. आदित्य सोन्नर वैद्यकीय अभ्यासक्रमात प्रविष्ट

येडसी येथील वेदश्री गुरूकुलाचे यशस्वी स्नातक व माजलगांव येथील युवा आर्य कार्यकर्ते प्रा.श्री लक्ष्मीकांत शास्त्री (सोन्नर) यांचे ज्येष्ठ सुपुत्र चि. आदित्य सोन्नर याने नुकत्याच झालेल्या महाराष्ट्र वैद्यकीय अभ्यासक्रम प्रवेश पूर्व परीक्षेत (M.H.Cet.) घवघवीत यश संपादन केले. विशेष आरक्षित प्रवर्गातून राज्यातून २४ वा. क्रमांक आल्याने तो शासनाने घोषित केलेल्या पहिल्याच यादीत वैद्यकीय अभ्यासक्रमास पात्र ठरला असून औरंगाबाद येथील शासकीय वैद्यकीय महाविद्यालयात त्याने प्रवेश ही घेतला आहे. चि. आदित्य यांचे शालेय शिक्षण माजलगांव येथील सिद्धेश्वर विद्यालयात तर उच्च माध्यमिक शिक्षण लातूरच्या राजर्षी शाहू महाविद्यालयात झाले. दहावीत त्याने ९५ % गुण मिळविले होते तर बारावीत ८९ % गुण प्राप्त केले.

चि. आदित्य ने मिळविलेल्या या उज्ज्वल यशाबद्दल त्याचे प्रांतीय सभा, गुरूकुलीय स्नातक मित्रमंडळ व सर्व आर्य समाजांकडून अभिनंदन व वैद्यकीय शिक्षण वाटचालीस हार्दिक शुभेच्छा !

# यज्ञप्रकाश आर्य यांच्या चारोळी ग्रंथाचे प्रकाशन

परळी येथील आर्य समाजाचे युवा कार्यकर्ते व नवोदित कवी श्री यज्ञप्रकाश हुलगुंडे (आर्य) यांनी रचलेल्या 'जीवन' या चारोळी ग्रंथाचे प्रकाशन सकाळ वृत्तसमुहाचे संपादक व ८४ व्या अ. भा. मराठी साहित्य संमेलाचे अध्यक्ष श्री उत्तम कांबळे यांचे हस्ते नुकतेच पार पडले.

परळी येथे म.सा.प. शाखा व पत्रकारसंघाच्या संयुक्त विद्यमाने स्व.गोपीनाथराव मुंडे स्मृती व्याख्यानमालेचे पहिले पुष्प श्री कांबळे यांनी गुंफले. या कार्यक्रमात श्री यज्ञप्रकाश यांच्या या चारोळी संग्रहाचे प्रकाशन झाले. या वेळी त्यांनी या कवीला काव्यनिर्मितीसाठी शुभेच्छा दिल्या.

या वेळी साहित्यिक प्रा. मधु जामकर, राजेश्वरराव देशमुख, मसापचे अध्यक्ष चंदुलाल बियाणी आदी उपस्थित होते. यज्ञप्रकाश आर्य हे परळी आर्य समाजाचे उपप्रधान व सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य (गुरूजी) यांचे सुपुत्र असुन आर्य समाजाच्या कार्यात हिरीरीने भाग घेतला. चारोळी ग्रंथात सामाजिक आशयाच्या जवळपास तीनशे चारोळ्या आहेत. ग्रंथनिर्मितीबद्दल आर्य समाजासह इतर क्षेत्रातील मान्यवरांनी श्री आर्य यांचे अभिनंदन केले आहे.

thearyasamaj.org

# 'मानवी मूल्यांचे संरक्षण संस्कृतभाषेमुळेच शक्य.'

## परळीतील संस्कृतदिन समारंभात संस्कृततज्ज्ञ डॉ.वेदालंकार

'समग्र विश्वात दिवसेंदिवस वाढत चाललेल्या विविध समस्यांचे समूळ निवारण आणि मानवी मूल्यांचे संरक्षण देववाणी संस्कृत भाषेमुळेच शक्य असल्याने जागतिक स्तरावर या भाषेचा प्रसार व प्रचार व्हावा आणि सुखी, शांतप्रिय व समृद्ध व्यवस्था प्रस्थापित व्हावी,' असे प्रतिपादन दिल्ली येथील वेद व संस्कृतभाषेचे प्रसिद्ध विचारवंत प्रो.डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार यांनी केले.

परळी येथील आर्य समाजातर्फे दि.१० ऑगस्ट रोजी **सामूहिक संस्कृत दिन** समारंभ साजरा करण्यात आला. याप्रसंगी प्रमुख वक्ते म्हणून श्री वेदालंकार बोलत होते. अध्यक्षस्थानी सामाजिक कार्यकर्ते व संस्थेचे सचिव श्री उग्रसेन राठौर हे होते, तर प्रमुख पाहुणे म्हणून पर्जन्यवृष्टी विशेषज्ञ डॉ.कमलनारायण आचार्य, संस्कृत व मराठी वाङ्मयाचे अभ्यासक कवी श्री मा.मु.कराड, योगशास्त्राचे अभ्यासक डॉ.सुरेश चौधरी, पं.सुखपाल आर्य हे उपस्थित होते. डॉ.वेदालंकार यांनी आपल्या मार्गदर्शनपर व्याख्यानात संस्कृत भाषा ही सर्व भाषांची जननी व समग्र ज्ञानविज्ञानाची अधिष्ठात्री असून सध्या वाढत चाललेल्या भ्रष्टाचार, अनैतिकता, सांप्रदायिकता, जातीवाद, धार्मिक अंधश्रद्धा, वाढते प्रदूषण आदी समस्यांचे निर्मूलन संस्कृत वाङ्मयाच्या प्रसारामुळे करता येते. यास्तव शासन व विविध सामाजिक संस्थांनी संस्कृतच्या प्रचार व प्रसारासाठी प्रयत्न करावेत, असे सांगितले. डॉ.कमलनारायण आचार्य यांनी वेदांत पर्यावरण रक्षणासाठी उपाय सांगितले असून संस्कृतात प्रतिपादित केलेल्या विविध विद्यांमुळे प्रदूषणाला आळा घालता येतो.

श्री कराड यांनी संस्कृत भाषेच्या अभ्यासाने इतर भाषांचे अध्ययन करणे सोपे जाते, असे सांगून प्राचीन वाङमयाचे महत्त्व सांगितले. तर डॉ.चौधरी यांनी संस्कृतातील विभिन्न ज्ञान तत्वांच्या आधारे धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष हे पुरुषार्थ साधले जातात असे सांगितले.

कार्यक्रमाची सुरुवात वेदमंत्र व काव्य गायनाने झाली. याप्रसंगी शालेय व महाविद्यालय पातळीवर घेण्यात आलेल्या संस्कृत भाषण व श्लोक गायन स्पर्धेतील विजयी विद्यार्थ्यांना मान्यवरांच्या हस्ते पारितोषिक वितरण करण्यात आली. शहरातील सामाजिक कार्यकर्ते श्री जयपाल लाहोटी व परिवाराच्या वतीने दिवंगत आर्य कार्यकर्ते नंदलाल लाहोटी यांच्या स्मरणार्थ हे पारितोषिके ठेवण्यात आली होती. यावेळी सर्वश्री पाटलोबा मुंडे, रंगनाथ तिवार, लक्ष्मणराव आर्य, ब्रह्मनादमुनी, मोडीवाले, विज्ञानमुनी यांच्यासह संस्कृतप्रेमी नागरिक व विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

thearyasamaj.org

कार्यक्रमाचे प्रास्ताविक पं.प्रशांतकुमार शास्त्री यांनी केले. सूत्रसंचलन तानाजी शास्त्री व प्रा.अरुण चव्हाण यांनी केले, तर पाहुण्यांचा परिचय प्रा.अतुल नरवाडकर व भागवतराव आघाव यांनी करुन दिला. शेवटी आभार नितीन व्हावळे यांनी मानले. कार्यक्रम सफल करण्यासाठी सर्वश्री प्रा.नरेश कन्हेरे, प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य, दीपक आघाव, फुलचंद रुपनर, प्रदीप आर्य, अशोक शास्त्री, वीरभूषण आर्य, गौरशेटे, शामसुंदर शास्त्री, सौ.बक्षी, सौ.पारेकर आदींनी परिश्रम घेतले.

**श्रावणी वार्ता**

## वेदप्रचार कार्यक्रमांना राज्यात अपूर्व प्रतिसाद

प्रतिवर्षाप्रमाणे याही वर्षी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे राज्यातील एकूण १३२ आर्य समाजांसाठी आयोजित **मानव जीवन कल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियानास** अपूर्व प्रतिसाद मिळाला. ठिकठिकाणच्या आर्य समाजांमध्ये दि. २७ जुलै ते २४ ऑगस्ट २०१४ या श्रावण मास काळात सभेने निर्धारित केलेल्या तारखांना सकाळी व संध्याकाळी यज्ञ, भजन, प्रवचन आदी कार्यक्रम, तर शाळा-महाविद्यालयांमध्ये विद्यार्थ्यांसाठी संस्कार प्रबोधन कार्यक्रम मोठ्या उत्साहात पार पडले. राज्यातील शहरी व ग्रामीण भागात वैदिकधर्माचा प्रचार होण्याच्या उद्देशाने सभेने उत्तरभारतातून १२ विद्वान व भजनीकांना तर राज्यातून जवळपास ६० प्रचारकांना आमंत्रित केले होते. विविध ठिकाणी हे श्रावणी कार्यक्रम उत्साहात पार पडल्याचे वृत्त आहे. स्थानिक आर्य समाज पदाधिकाऱ्यांनी व कार्यकर्त्यांनी मोठ्या परिश्रमाने प्रयत्नपूर्वक वेदप्रचार समारंभ संपन्न केले.

(प्राप्त झालेले वृतांत प्रसिद्ध करीत आहोत.)

## रामनगर लातूरला श्रोते मंत्रमुग्ध

लातूरमधील रामनगर आर्य समाजातर्फे दि. २७ जुलै ते २ ऑगस्ट या दरम्यान श्रावणी महोत्सव पार पडला. वैदिक विद्वान डॉ. कमलनारायणजी आचार्य यांनी आपल्या प्रभावपूर्ण शैलीद्वारे सोप्या भाषेतून विविध विषयांवर प्रबोधन केले. तर आर्य भजनोपदेशक पं. अमरेश आर्य यांनी मधुर संगीत भजनांच्या माध्यमाने श्रोत्यांना खूपच प्रभावित केले. या सप्ताहात दररोज सकाळी व संध्याकाळी वेदपारायण यज्ञ, गुणवंत विद्यार्थ्यांचा सत्कार, ग्रंथ प्रदर्शन , पारिवारिक सत्संग आदी कार्यक्रम पार पडले.

समापन दिनी सौ. रत्नमाला सोनेरावजी आचार्य यांच्यातर्फे सर्वांसाठी प्रसाद (भोजन) व्यवस्था करण्यात आली होती. आर्य कार्यकर्त्यांनी नियोजनबद्धरीत्या वेदमहोत्सव साजरा केला. त्याबद्दल त्यांचे सर्वत्र कौतुक होत आहे.

thearyasamaj.org

# अंधोरी व येलदरी येथे कार्यक्रम

अहमदपूर तालुक्यातील अंधोरी व येलदरी येथे दि. १७ व १८ ऑगस्ट रोजी श्रावणी वेदप्रचाराचा कार्यक्रम झाला. वेदप्रचारक श्री धोंडिरामजी शेप यांनी पारिवारिक यज्ञासोबतच शाळेत व्याख्याने दिली. अंधोरी येथे श्री राजू पाटील यांच्या घरी तर येलदरी येथे ज्ञानोबा गुट्टे यांच्या घरी यज्ञसत्संग कार्यक्रम पार पडला तर माध्यमिक शाळेत श्री शेप गुरूजींचे मौलिक व्याख्यान संपन्न झाले.

# घटांग्रा व राणी सावरगांवात प्रबोधन पर कार्यक्रम

गंगाखेड तालुक्यातील घटांग्रा व राणी सावरगांव येथे श्रावणीनिमित्त सार्वजनिक यज्ञासोबत गांवातील शाळांमध्ये पं. संभाजीराव पवार व वेदप्रचार अधिष्ठाता पं. लक्ष्मणराव आर्य यांनी विद्यार्थ्यांसाठी प्रबोधनात्मक कार्यक्रम घडवून आणले. घटांग्रा येथे दि. १५ ऑगस्ट रोजी सकाळी श्री पवार यांच्या पौरोहित्याखाली झालेल्या यज्ञ व प्रवचन कार्यक्रमात ग्रामस्थ श्रद्धेने सहभागी झाले. दि. १६ ऑगस्ट रोजी सकाळी स्थानिक स्वामी दयानंद उ.मा.विद्यालयात जवळपास दीडशे विद्यार्थ्यांसमोर श्री पवार व पं. लक्ष्मण गुरूजींनी **वेदांची शिकवण आणि चारित्र्य संवर्धन** या विषयांवर प्रबोधन केले. दुपारी १२ वा. राणी सावरगांव येथील जि.प.प्रा. शाळेत साडेतीनशे विद्यार्थ्यांसमोर **मानवीय मूल्ये** जोपासण्याचे आवाहन दोन्ही वक्त्यांनी केले. नंतर ३ वा. रेणुकामाता विद्यालयात झालेल्या कार्यक्रमांना ही विद्यार्थ्यांकडून चांगलाच प्रतिसाद मिळाला.

# अंबाजोगाईत यज्ञ, पारिवारिक सत्संग व व्याख्याने

अंबाजोगाई येथील आर्य समाजाच्या वतीने दि. २७, २८, २९ जुलै रोजी श्रावणी पर्व साजरा झाला. प्रथमदिनी सकाळी यज्ञ-सत्संग संपन्न झाले, तर स्थानिक दोन शाळांमध्ये प्रा.लक्ष्मीकांत शास्त्री, भानुदासराव देशमुख व वशिष्ठ आर्य यांची व्याख्याने पार पडली. श्रावणी पर्वाची सांगता श्री देशमुख यांच्या घरी आयोजित पारिवारिक संत्संगाने झाली. यावेळी डॉ. नयनकुमार आचार्य यांनी यज्ञाचे पौरोहित्य केले. गुरूकुलाचे स्नातक व आर्य इंग्लीश स्कूलचे संचालक श्री गोपीचंदजी आर्य (शिंदे) व योगाभ्यासी श्री भानुदासराव देशमुख यांनी उपस्थितांना मार्गदर्शन केले. यावेळी श्री भोसले, देशमुख बंधू व इतर योगप्रेमी महिला पुरूष उपस्थित होते.

thearyasamaj.org

# परभणीत श्रावणीला उत्तम प्रतिसाद

परभणी येथील अग्रवाल मंगल कार्यालयात दि.२९, ३० व ३१ जुलै २०१४ रोजी पार पडलेल्या वेदज्ञान प्रचार महोत्सवाला याही वर्षी चांगला प्रतिसाद मिळाला. स्थानिक आर्य कार्यकर्त्यांच्या प्रोत्साहनांमुळे या श्रावणी यज्ञात नवे यजमान दांपत्य सहभागी झाले होते. वैदिक विद्वान पं. सुधाकरजी शास्त्री यांनी मराठी व हिंदी भाषेतून केलेले वेदाधारित तत्वज्ञानाचे विवेचन श्रोत्यांना फारच आवडले श्री शास्त्रीजींनी यावेळी अंधश्रद्धा दूर सारून वेदांनी सांगितलेल्या पवित्र व शुद्ध मार्गाने चालण्याचा मोलाचा संदेश दिला. भजनोपदेशक पं. सुभाष गायकवाड यांनी सादर केलेली भजने समर्पक ठरली. कार्यक्रमांसाठी प्रधान विजयकुमार अग्रवाल, मंत्री बालकिशन बिर्ला, कोषाध्यक्ष डॉ. धनंजय औंढेकर, प्रा.डॉ.प्रकाश कदम, दिगंबर देवकते, राजेंद्र जगदाळे, बाबुराव आर्य इ. परिश्रम घेतले.

# परळी वेदप्रचार सप्ताह उत्साहात

'सध्या जागतिक शांततेसाठी अनेक मत-संप्रदाय व त्यांचे अनुयायी प्रयत्नशील आहेत पण सुख, शांती आणि कल्याणासाठी ठोस विचारसरणी नसल्याने त्यांचे सर्व प्रयत्न फोल ठरतात. वेदांची विचारसरणी मात्र विशुद्ध मानवता, अध्यात्मिकता व वैज्ञानिकता यावर आधारित असल्याने वेदज्ञानाशिवाय वैश्विक शांतता प्रस्थापित होऊच शकत नाही. यास्तव सर्व मतवाद्यांनी आपले संकीर्ण विचार सोडून वेदांकडे वळावे 'असे प्रतिपादन दिल्लीहून आमंत्रित वेदअभ्यासक प्रा.डॉ.रघुवीर वेदालंकार यांनी केले. परळी येथे दि. ४ ते १० ऑगस्ट दरम्यान पार पडलेल्या श्रावणी वेदप्रचार उत्सवाच्या समाप्तदिनी श्री वेदालंकार बोलत होते. दररोज सकाळी अनेंक यजमानांच्या उपस्थितीत यज्ञ भजनोपदेश, प्रवचन तर रात्री ८ ते १० वा. दरम्यान श्री वेदालंकार यांचे विविध विषयांवर व्याख्याने पार पडली. सोबतच पं. सुखपाल आर्य यांचा सुमधुर भजनोपदेश देखील होत असे. या कार्यक्रमास परळी शहर व परिसरातील वेद व अध्यात्मप्रेमी श्रोत्यांनी हजेरी लावली होती. श्रावणी उत्सवासोबतच परळीतील वैद्यनाथ महाविद्यालय, ल.दे.महिला महाविद्यालय, न्यू. हायस्कूल, सरस्वती विद्यालय या शैक्षणिक संस्थांमध्ये डॉ. वेदालंकार व पं. आर्य यांचे प्रबोधन पर कार्यक्रम पार पडले.

---

**कृपया राज्यातील इतर ही सर्व आर्य समाजांनी आपल्या श्रावणी कार्यक्रमांचे वृत्तांत प्रकाशनासाठी वैदिक गर्जनेकडे त्वरीत पाठवावेत- संपादक**

thearyasamaj.org

शोक वार्ता

# प्रा. शिवाजीराव गायकवाड काळाच्या पडद्याआड

उमरगा तालुक्यातील औराद (गु.) येथील आर्य समाजाचे प्रधान व धडाडीचे निष्ठावंत आर्य कार्यकर्ते प्रा. शिवाजीराव कोंडिबा गायकवाड (कारभारी) यांचे दि.१५ ऑगस्ट २०१४ रोजी सकाळी १०.०० वा. च्या सुमारास मुंबई येथे हृदयविकाराच्या झटक्याने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ६९ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात् पत्नी लतिकाबाई, ३ मुली- सौ. ज्योती, सौ.डॉ. संध्या (दोघी मुंबईत), सौ. विनया (करमाळा), जावई व सुपुत्र श्री रविकुमार (अभियंता-अमेरिका), सून, नातवंडे असा परिवार आहे.

प्रा.श्री गायकवाड हे आपले चिरंजीव श्री रविकुमार यांच्या भेटीसाठी २ महिन्यापूर्वी पत्नींसह अमेरिकेला गेले होते. तेथे वास्तव्य करून दि. १५ ऑगस्ट रोजी पहाटे विमानाने ते मायदेशी मुंबईला परतले. सकाळी स्नान, अल्पोपाहारादी आटोपून बसले असतांनाच अचानक हृदयविकाराचा झटका आला. उपचारासाठी रूग्णालयात नेण्यापूर्वीच त्यांची प्राणज्योत मालवली.

श्री गायकवाड यांच्या आकस्मिक निधनाने लातूर, उमरगा, व औराद परिसरात एकच शोकाककळा पसरली. त्यांचे पार्थिव त्यांचे जन्मगांव औराद येथे आणण्यात आले व दुसऱ्या दिवशी सकाळी ११ वा. अत्यंत शोकाकुल वातावरणात पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

यावेळी आयोजित शोकसभेत प्रांतीय सभेतर्फे डॉ.नयनकुमार आचार्य, आर्य समाज औराद तर्फे श्री रघुराम गायकवाड, मित्रमंडळी तर्फे श्री रामराव सनातन, श्री अंबादासराव सोमवंशी, परळी गुरूकुलातर्फे श्री तानाजी शास्त्री आदींनी श्रद्धांजली वाहिली.

**प्रा.गायकवाड यांचा संक्षिप्त परिचय-**

उस्मानाबाद जिल्ह्याच्या उमरगा तालुक्यातील औराद सारख्या छोट्याशा गावातील गायकवाड दांपत्यांच्या पोटी कष्टकरी शेतकरी कुटुंबात जन्मलेले श्री शिवाजीराव लहानपणापासूनच होतकरू, मेहनती, सत्यान्वेषी व शेतीनिष्ठ विचारांचे पाईक होते. पू. स्वामी श्रद्धानंदजी (हरिश्चंद्र गुरूजी) यांचे सान्निध्य प्राप्त झाल्याने ते वैदिक विचारांकडे आकृष्ट झाले. आर्य समाजाच्या विद्वानांमध्ये त्यांचा वावर वाढला. अशातच कृषिविषयक पदव्युत्तर (एम.एस्सी.ॲग्री) शिक्षण प्राप्त केल्यानंतर

thearyasamaj.org

सुरूवातीला कांही काळ उस्मानाबाद येथे कृषी अधिकारी म्हणून व नंतर लातूर येथील कृषी महाविद्यालयात त अधिव्याख्याते पदावर रूजू झाले. अध्यापन सेवेबरोबरच लातूरात राहत असतांना गावाकडील शेतीव्यवसाय व आर्य समाज संस्थेच्या प्रचार कार्याकडे लक्ष दिले. जवळपास ३० वर्षांपासून ते या संस्थेचे प्रधान म्हणून कार्यरत होते. आपल्या सहकारी पदाधिकाऱ्यांसोबत राहुन त्यांनी गावात मानवता संस्कार शिबिर, श्रावणी महोत्सव, वेदप्रचार आदी कार्यांना गती दिली. अलीकडे आर्य समाजांच्या इमारत उभारणीचे कार्य त्यांनी मोठ्या प्रयत्नांनी पूर्ण केले. गाव व परिसरात एक तळमळीचा मितभाषी आर्य कार्यकर्त्ता, शेतीविषयक मार्गदर्शक, सार्वजनिक व धार्मिक कार्यात पुढाकार घेणारा आणि सर्वांच्या मदतीला धावून जाणारा अजातशत्रू कार्यकर्त्ता म्हणून त्यांची ओळख होती. गेल्या १५ वर्षापासून ते महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे अंतरंग सदस्य होते.

आपल्या तीन मुलीं व एक मुलगा यांना उच्चविद्याविभूषित बनवून त्यांनी सफल गृहस्थाश्रमीचे उदाहरण जगासमोर ठेवले. दोन मुलींना (एम.बी.बी.एस.) डॉक्टर तर एका मुलीस एम.एस्सी.बी.एड.बनवून त्यांना त्या-त्या क्षेत्रातील जावई शोधून योग्य घरी विवाहित केले. तर सुपुत्र चि.रविकुमार यास आंतर्राष्ट्रीय स्तरावरील सॉफ्टवेअर इंजिनियर बनविले. सध्या तो अमेरिकेतील एक मोठ्या कंपनीत कार्यरत आहे. अशा यशस्वी सफल गृहाश्रमी व सामाजिकतेची जाण असलेल्या आर्य कार्यकर्त्याच्या आकस्मिक निधनाने आर्य समाजाची अपूर्व हानी झाली आहे.

## स्वा.सै.साहेबराव मांगले यांचे निधन

हैद्राबाद स्वातंत्र्य आंदोलनातील स्वा.सै.व घाटपिंपरी ता. वाशी जि. धाराशिव येथील जुन्या पीढीतील आर्य कार्यकर्त्ते श्री साहेबराव मांगले यांचे मागील महिण्यात वृद्धापकाळाने निधन झाले. मृत्युसमयी ते ८५ वर्षे वयाचे होते.त्यांच्या पश्चात् पत्नी,मुले, मुली, जावई व नातवंडे असा परिवार आहे.

घाटपिंपरी व ईट परिसरातील अनेक कार्यकर्त्यांनी हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात भाग घेऊन रजाकारांच्या जुलमी अत्याचारांविरूद्ध आवाज उठविला होता. श्री मांगले हे त्यांपैकीच एक होते. ईट येथील चार आर्य हुतात्मे किशनराव टेके, वीरांगना सौ. गोदावरीबाई टेके, विश्वनाथ

thearyasamaj.org

तेली, मारूती माळी यांच्या सोबत राहुन स्वा.सै. मांगले यांनी कार्य केले कधी भूमिगत राहुन तर कधी उघडपणे त्यांनी निजाम राजवटीविरूद्ध आवाज उठविला. लोकांमध्ये जनजागृती घडवून आणली व युवकांना प्रेरित केले. गावातील खाजगी शाळेत लहान मुलांना शिकविण्याचे कार्य केल्याने त्यांना लोक **गुरूजी** या नावाने संबोधत. मांगले गुरूजींनी पुढे आपल्या सहकारी मित्रांसमवेत राहून आर्य समाजाच्या प्रचाराचे काम केले. गावात मुलांसाठी मानवता संस्कार शिविर आयोजित केले. तर ईट येथे वरील चार हुतात्म्यांचा स्मृति समारोह देखील घडवून आणला. दिवंगत स्वा.सै.मांगले गुरूजींच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. प्रांतीय सभेचे मार्गदर्शक डॉ. ब्रह्ममुनिर्जीनी घाटपिंपरी येथे जाऊन स्व. मांगले यांना आर्यजनांतर्फे श्रद्धांजली वाहिली व शोकाकुल कुटुंबियांचे सांत्वन केले.

# सौ. तहानुबाई वाळके यांचे देहावसान

अहमदनगर पासून अवघ्या १० ते १२ कि.मी.अंतरावरील मेहेराबाद (अरणगांव) येथील आर्य समाजाचे श्रद्धाशील कार्यकर्ते श्री भाऊसाहेब वाळके (आर्य) यांच्या सुविद्य धर्मपत्नी सौ. तहानुबाई वाळके यांचे दि. ९ जुलै २०१४ रोजी वृद्धापकाळाने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ७६ वर्षे वयाच्या होत्या. त्याच्या मागे तीन मुली, २ मुले (श्री नरेंद्र व श्री प्रवीण), सुना, जावई, नातू-नाती असा परिवार आहे. सौ. तहानुबाई या धार्मिक, श्रद्धाळू, प्रेमळ स्वभावाच्या व सात्विक वृत्तीच्या होत्या. घरी येणाऱ्यांचे त्या मोठ्या सहृदय भावनेने आदरातिथ्य करीत असत. आपले पती श्री भाऊसाहेब यांच्या सोबत राहून त्यांनी आर्य विचारसरणी जोपासली म. दयानंद निर्वाण शताब्दी अजमेर (१९८३), आंतर्राष्ट्रीय आर्य संमेलन दिल्ली (१९९०) अजमेर व उदयपुर (राजस्थान) येथील आर्य समाजाचे समारंभ (१९९७), आंतर्राष्ट्रीय आर्य महासंमेलन, मुंबई (२००१,) आर्य महासंम्मेलन, मथुरा (२००९), ऋषि दयानंद जन्मोत्सव, टंकारा आदी कार्यक्रमांमध्ये त्या सहभागी झाल्या होत्या. सौ. वाळके यांच्या पार्थिवावर वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. नंतर सभेचे मार्गदर्शक डॉ. ब्रह्ममुनिजी यांच्या उपस्थितीत पं. सुधाकर शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली शांतियज्ञ पार पडला.

**वरील सर्व दिवंगत आत्म्यांना प्रांतीय आर्य प्र.सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली !**

**शोकाकुल कुटुंबियांच्या दुःखात आर्यजन सहभागी आहेत.**

thearyasamaj.org



## तरूणांना प्रेरणा (कार्य)



उदयपुरमध्ये महर्षी दयानंदांनी रचलेल्या **सत्यार्थ प्रकाश** या ग्रंथामुळे वैचारिक क्रांती चे आंदोलन तीव्र झाले. अनेक नवतरूणांनी वैदिक धर्माची दीक्षा घेतली व ते आपल्या आर्य संस्कृती व स्वराज्य प्राप्तीसाठी संघर्ष करण्यास तत्पर झाले. यात खालील देशभक्त तरूणांचा समावेश होता.

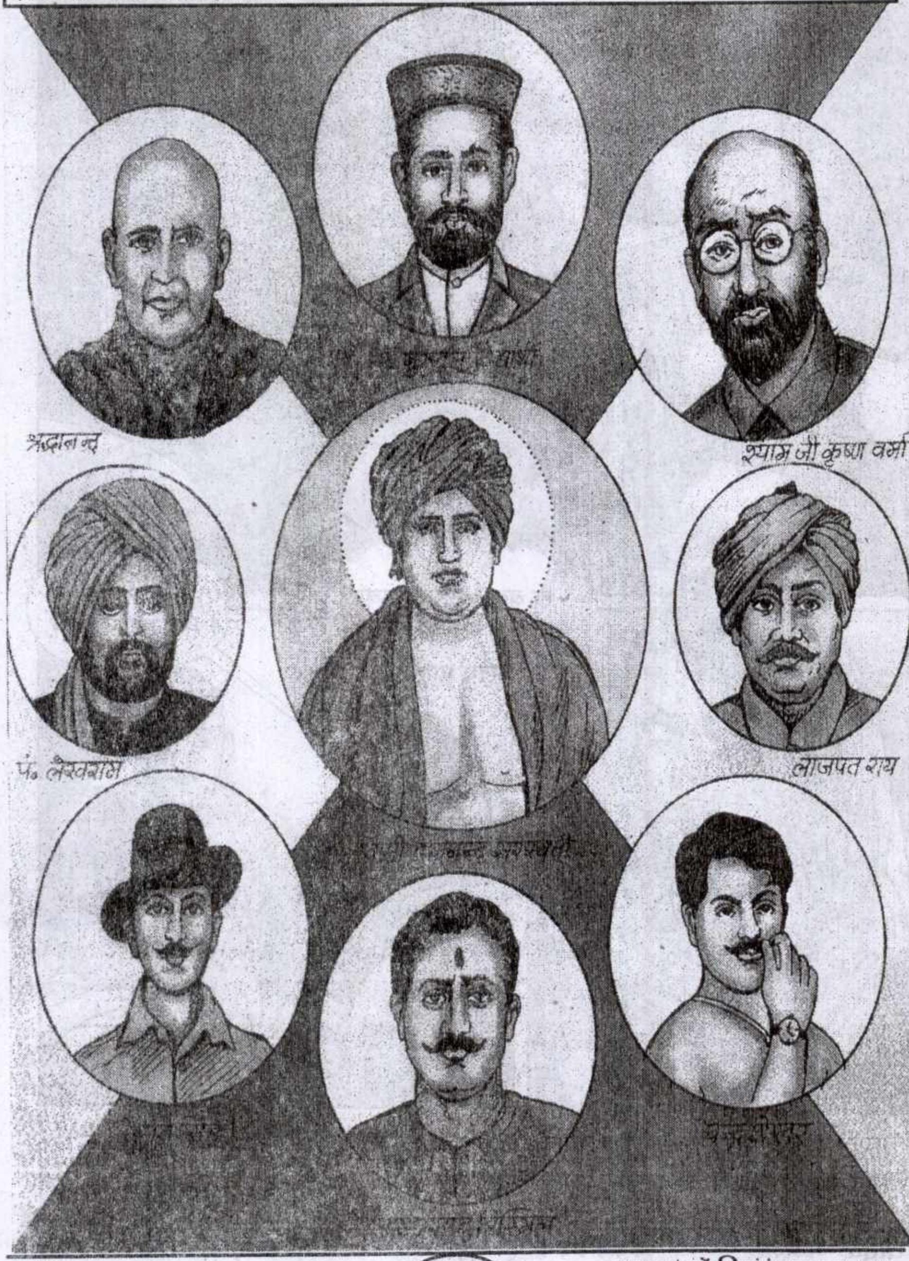

thearyasamaj.org

वेदप्रचाराच्या निमित्ताने स्वामीजी जोधपुरला गेले. तेथे जोधपुरच्या राजांना नन्हीं नामक नृत्यांगणेसोबत राहत असतांनाचे दृश्य पाहुन स्वामीजी उदास झाले.

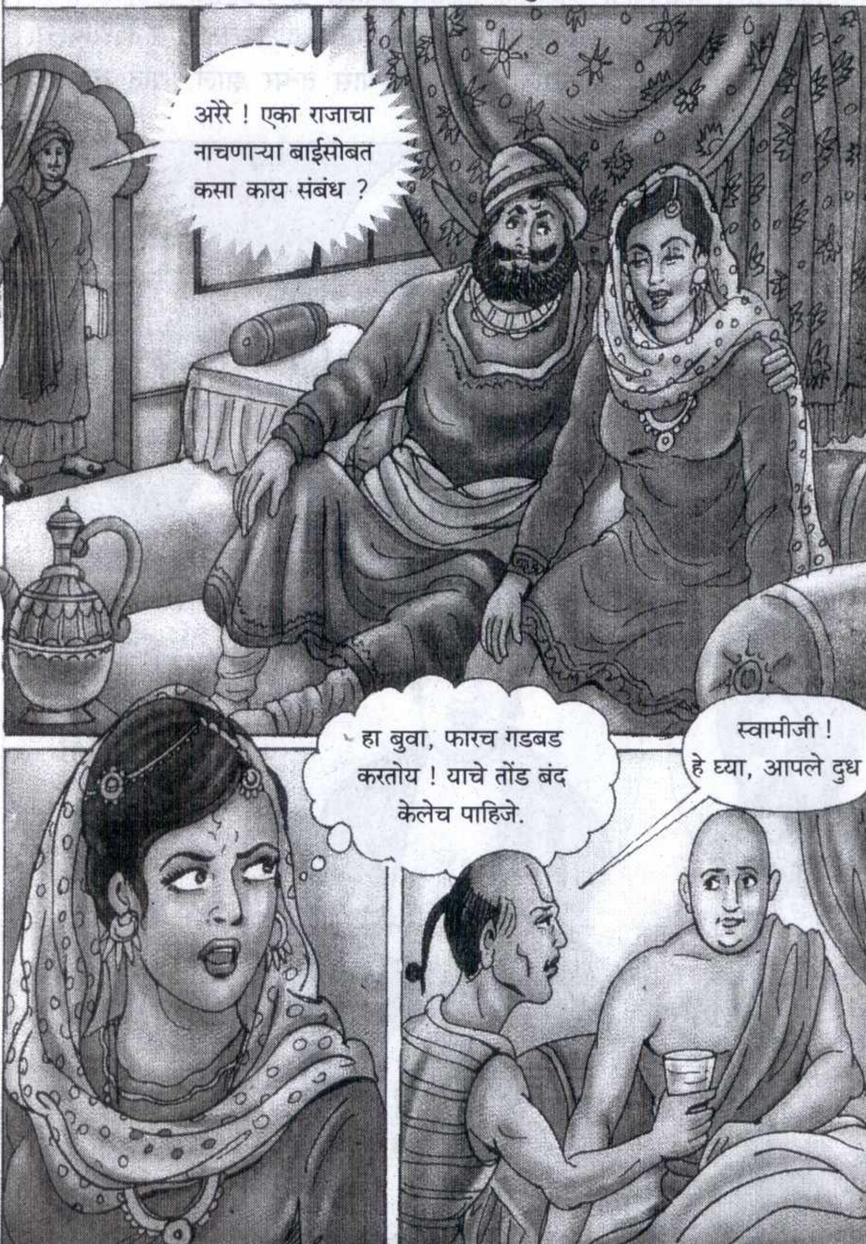


राजाने नन्हीजानला तेथून निघून जाण्याची आज्ञा दिली. इंग्रज आणि नन्हीजानच्या षड्यंत्रामुळे स्वयंपाक्याने दुधात विष घालून ते स्वामीजींना दिले.

**(क्रमशः)**

thearyasamaj.org

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

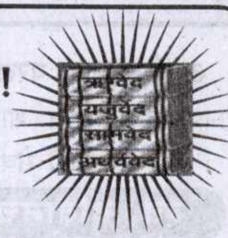


# वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

# महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

( पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

## - मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. [redacted]ीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

**आर्य समाज, परली-वै. द्वारा संचालित स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुलाश्रम में**

दानप्रदात्री माता स्व. शान्तिदेवी मायर(लन्दन) द्वारा प्राप्त १५ लाख रूपयों के पावन दान से रूग्णों की सेवा में मराठवाडा की पावन सन्तभूमि में सर्वप्रथम उद्घटित

# स्व. दीवानचन्द मायर स्मृति 'संजीवनी आरोग्य मंदिर'

**शरीर शुद्धि से स्वास्थ्यलाभ, रोगनिवारण व सुंदरता प्राप्त करो।**

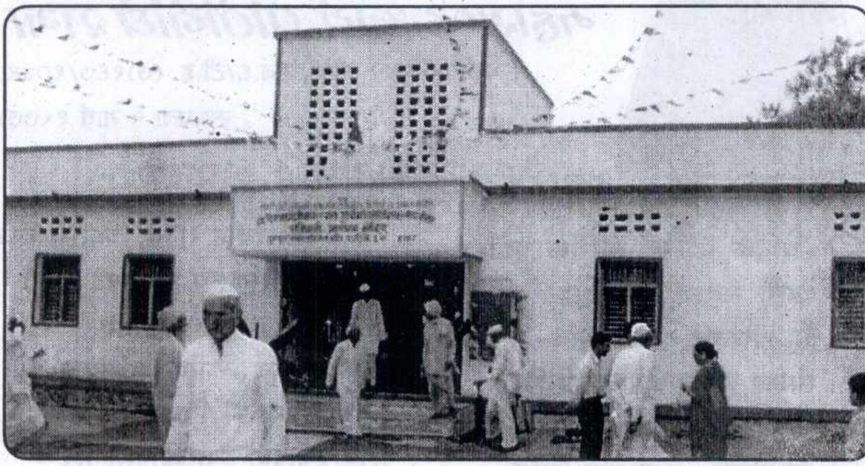

**औषधिविना विविध प्रकार के जीर्ण रोग, मधुमेह, रक्तचाप, हृदयविकार, कर्करोग, वातरोग, आमवात, कुष्ठरोग, मोटापा, चेहरों व आखों का कालापन, मुखमण्डल विद्रुप होना, वांग आदि के साथ मानसिक तान तनाव, निराशा, उद्विग्नता, पागलपन, आदि रोगों का शरीर शुद्धि के माध्यम से सम्पूर्ण इलाज। इसके लिए योग, प्राकृतिक व आयुर्वेद चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य लाभ का सुनहरा अवसर इस आरोग्य मन्दिर में!**

**आरोग्य मन्दिर की विशेषताएं**

* तज्ज्ञ एवं अनुभवी वैद्यों द्वारा इलाज।
* महिला व पुरूष रूग्णों के लिए स्वतंत्र चिकित्सा कक्ष।
* महिला रूग्णों के लिए अलग से महिला परिचारिका।
* रूग्णों की भोजन व निवास की अल्पशुल्क में व्यवस्था।
* शुद्ध हवा-पानी व निसर्ग का सान्निध्य।
* आध्यात्मिक जीवनयापन के लिए प्रयत्न।

**चिकित्सा समय**
प्रातः ६ से ९/सायं. ४ से ६

**रूग्ण जांच व पंजीकरण**
प्रातः १० से १२ बजे तक

**पंजीकरण शुल्क रू. ५० (प्रति रूग्ण)**

**चिकित्सक**

**वैद्य विज्ञानमुनि** (मोबा.९९७५३७५७११) **डॉ. ब्रह्ममुनि** (मोबा.९४२१९५१९०४)

thearyasamaj.org

## * प्रकाशन *

परली के आर्य युवक श्री यज्ञप्रकाश हुलगुंडे द्वारा रचित 'जीवन' इस लघु काव्यसंग्रह का विमोचन करते हुये दै.सकाल के संपादक श्री उत्तम कांबले। साथ में है सर्वश्री प्रा.जामकर, राजेश्वरराव देशमुख, बियाणी,वाघमारे।

## -* संस्कृत दिवस समारोह २०१४ *-

आर्य समाज परली द्वारा आयोजित 'संस्कृत दिवस समारोह' का उद्‌घाटन करते हुए वैदिक विद्वान प्रो.डॉ. रघुवीरजी वेदालंकार, डॉ. कमलनारायणजी आर्य,पं. सुखपालजी आर्य, श्री मा.मु. कराड, श्री राठौर व श्री प्रशांतकुमार शास्त्री ।

संस्कृत भाषा के महत्वपर प्रकाश डालते हुए प्रमुख अतिथि प्रो.डॉ.रघुवीरजी वेदालंकार । मंच पर विराजमान हैं अन्य मान्यवर।

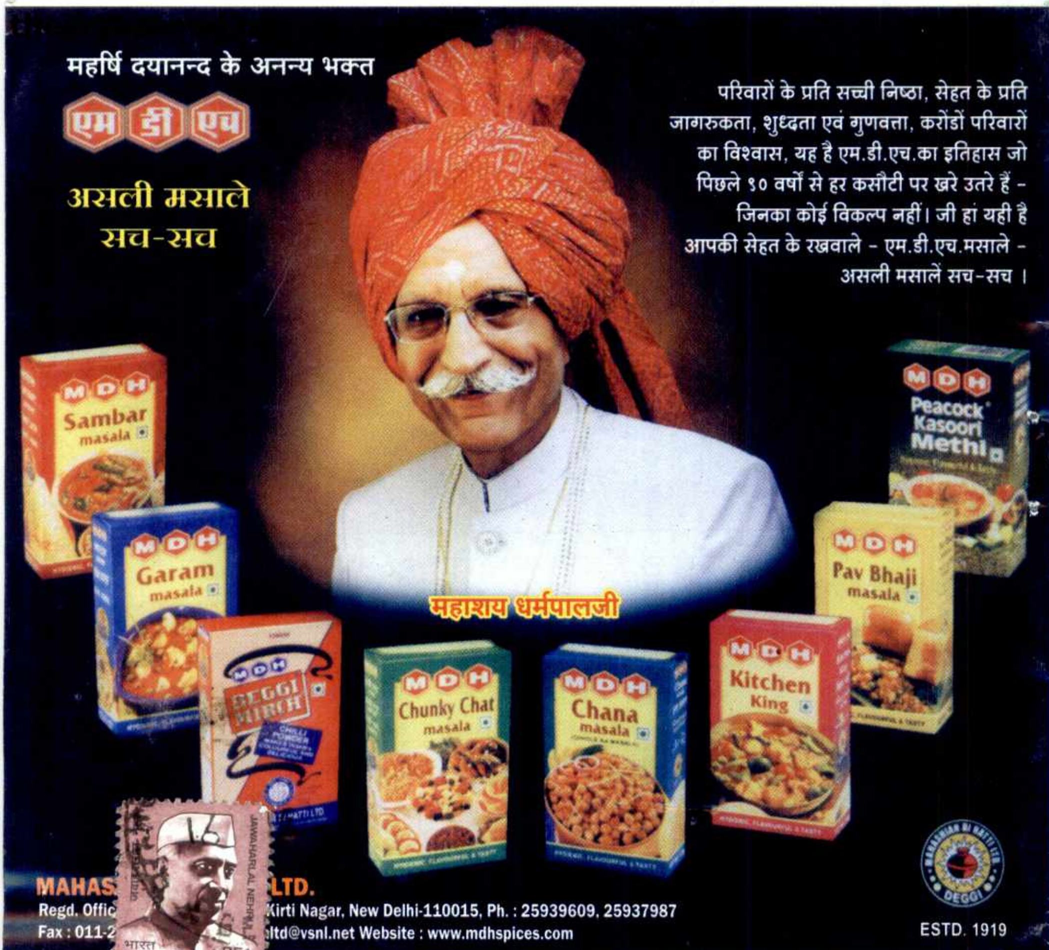


Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

L-2/18/RNP /16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
**मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,**
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)


यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

**स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान** की

जन्म ३१ मार्च १९२८ — पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट — निधन १७ मार्च २०००

सौजन्य

| | | |
|---|---|---|
| जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा | दयाराम राजाराम बसैये | ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान |
| प्रधान | मंत्री | कोषाध्यक्ष |

**आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)**